पुनर्नवा

प्रथम संस्करण 2024-25

हिन्दी विभाग

वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा वाराणसी

विभागीय गतिविधियाँ

realme Shot on realme C53 108MP
2024 08 13 13:12

हिन्दी विभाग
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
D59/142-1, गुरुबघ, भेलूपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010, भारत
Lat 25.306485°
Long 82.995756°
13/08/24 04:07 PM GMT +05:30

"शिक्षा वह पूर्णता है जिसके द्वारा व्यक्ति निरन्तर ज्ञानरूपी प्रकाश पाता रहता है।"

-एनी बेसेंट

प्राचार्या का संदेश

"महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा विभागीय पत्रिका 'पुनर्नवा' का शुभारंभ वर्तमान सत्र 2024-25 में किया जा रहा है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है। पत्रिका छात्राओं की रचनात्मकता के प्रस्फुटीकरण तथा प्रस्तुतीकरण का एक माध्यम होगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। छात्राओं में हिन्दी साहित्य के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने में यह पत्रिका निश्चित तौर पर योगदान देगी। वर्तमान में युवाओं में पुस्तक पाठन की प्रवृत्ति कम हो रही है जिससे उनकी भाषायी संपन्नता भी कम हुई है। पत्र-पत्रिका तथा पुस्तक पठन-पाठन भाषायी समृद्धता की अभिवृद्धि करती है। इस परिप्रेक्ष्य में पत्रिका का आगमन एक सराहनीय प्रयास है। पहला कदम नींव का पत्थर होता है और पत्रिका का यह प्रथम अंक इस रूप में स्थापित हो, यह मेरी शुभकामना है। आगामी सत्रों में भी यह छात्राओं के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में स्थापित हो, इसी मंगलकामना के साथ हिन्दी विभाग को सभी शिक्षिकाओं, संपादक मंडल तथा विभाग की छात्राओं को मेरा हृदय से आशीर्वाद"।

-प्रो. रचना श्रीवास्तव
प्राचार्या

संपादकीय

मनुष्य स्वभावतः क्रियाशील प्राणी है, वह अपनी अनुभूतियों एवं भावनाओं को सरलता से अपनी मातृभाषा में ही व्यक्त करता है, क्योंकि अपनी मातृभाषा में सीखने एवं अभिव्यक्ति करने में जो सुगमता होती है, वह अन्य भाषा में नहीं। इस विशाल विविधता भरे देश में विविध भाषाएँ पढ़ी एवं बोली जाती हैं। हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जिसे देश का प्रत्येक शिक्षित- अशिक्षित, नागरिक-ग्रामीण सभी समझते एवं बोलते हैं। इस ई-पत्रिका के माध्यम से हमारा उद्देश्य केवल हिंदी का प्रचार-प्रसार करना नहीं अपितु अपने अनुभव, भावनाओं और लेखनी को भी सामने लाना है।

विद्यार्थी सामाजिक परिवेश में घट रही घटनाओं से सीखते हैं, रचनाकारों को पढ़ते हैं, और महाविद्यालय की गतिविधियों में भाग लेते हुए चिंतन की प्रक्रिया से समृद्ध होते हैं। इस चिंतन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का संचार होता है। हिंदी विभाग की ई-पत्रिका पुनर्नवा विद्यार्थियों की इसी क्रियाशील चेतना की अभिव्यक्ति ही पत्रिका के प्रथम अंक में सम्मिलित करने का प्रयास है। यह ई-पत्रिका छात्राओं की समझ को विकसित एवं प्रसारित करने का कार्य अत्यधिक सुगमता से करेगी तथा इसके माध्यम से भविष्य में भी छात्राओं का बौद्धिक एवं तकनीकी विकास विस्तृत पटल पर संभव हो सकेगा।

पत्रिका में स्नातक तृतीय वर्ष और परास्नातक द्वितीय वर्ष के प्रयास संकलित है। किंतु मुख्य रूप से यह ई-पत्रिका परास्नातक द्वितीय वर्ष द्वारा संपादित की जा रही है।

पत्रिका के केंद्र में हिंदी की विभिन्न विधाएं:- कविता, कहानी, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, आदि सम्मिलित है। जिसमें छात्राओं द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखा गया है जैसे:- युवा शक्ति, किन्नर की आत्मकथा, बलात्कार, नारी शक्ति पर कविता लिखी गई है तो अभिलाषा, जागरूकता, दहेज का लालच आदि पर कहानी । इसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास और बटवारे की आग जैसे विषयों पर नाटक भी लिखा गया है, साथ ही साक्षात्कार जैसी विधा पर एक साक्षात्कार भी सम्मिलित है।

अंत में मैं अपनी सभी शिक्षिकाओं का आभार व्यक्त करती हूँ, विशेष रूप से हमारी विभाग प्रभारी प्रोफेसर आशा यादव जी को, जिनके कुशल नेतृत्व, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से यह कार्य संभव हो सका है। मैं अपने छोटे- बड़े सभी साथियों को भी बधाई देती हूँ, जिन्होंने अति उत्साह के साथ अपनी रचनाओं को प्रेषित किया । तत्पश्चात मैं संपादकीय मंडल के सभी सदस्यों को भी हार्दिक बधाई देती हूँ, जिनके सहयोग से यह कार्य संपन्न हो सका।

धन्यवाद।

आपकी

~रिशिता

स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष

सह संपादक की कलम से

वसन्त कन्या महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की प्रथम पत्रिका पुनर्नवा में आप सभी का स्वागत करती हूँ, इस पत्रिका का हिस्सा बनने के लिए मैं विभाग की सभी शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन और संपादकीय मंडल तथा सभी सहपाठियों का आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग से पत्रिका का कार्य पूर्ण हो सका। मुझे इस उपलब्धि पर गर्व है जिसे हमने मिलकर हासिल किया है, और मैं हमेशा इस अनुभव को संजोकर रखूँगी।

~प्रिया कुमारी सिंह

स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष

हिंदी विभाग

प्रोफ़ेसर आशा यादव

कविता, भाषा विज्ञान एवं काव्यशास्त्र

(विभागाध्यक्ष)

डॉ सपना भूषण

कथा साहित्य

(सह आचार्य)

डॉ शशिकला
कथा साहित्य
(सह आचार्य)

डॉ शुभांगी श्रीवास्तव
कथेत्तर साहित्य
(सहायक आचार्य)

डॉ प्रीति विश्वकर्मा

कविता एवं भाषा विज्ञान

(मानदेय प्रवक्ता)

डॉ ज्योति गुप्ता

कथा साहित्य

(मानदेय प्रवक्ता)

सुश्री राजलक्ष्मी जायसवाल

कथा साहित्य

(मानदेय प्रवक्ता)

संपादकीय मंडल

संपादक

रिशिता (परास्नातक द्वितीय वर्ष)

सह संपादक

प्रिया कुमारी सिंह (परास्नातक द्वितीय वर्ष)

सदस्य

प्राची सिंह

तनुजा मिश्रा

सबीना परवीन

संस्कृति कुशवाहा

जोया परवीन

अनुक्रमणिका

रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.कविता		
1. युवा शक्ति	प्राची सिंह	2
2. किन्नर की आत्मकथा	संस्कृति कुशवाहा	3
3. बलात्कार	रिशिता	4-5
4. माँ मुझे गर्भ में ही रहने दो	तनूजा मिश्रा	6
5. प्रकृति	शालिनी मिश्रा	7
6. आँगन से आँगन तक	शालिनी कुमारी	8
7. प्रेमचंद जयंती विशेष	वंदना गुप्ता	9
8. आज का भारत	स्नेहा सिंह	10
9. नारी शक्ति	रुबी सिंह	11
10. कहाँ? नौकरी सरकारी है?	सुचिता कुमारी	12
11. मंजिल	तनिषा यादव	13
12. बढ़ते चलो	सौम्या यादव	14
13. स्वरचित	वीनू पासवान	14
2. कहानी		
1. अभिलाषा	तनूजा मिश्रा	16-17
2. बदलाव	पूजा यादव	18-20
3. जागरूकता	ज्योति यादव	21-23
4. दहेज का लालच	मानसी तिवारी	24-25
5. बेहतर विकल्प	आद्या सलोनी	26-27
6. कृष्णा	शकुंतला	28-29
7. एक सजीव दुनियाँ	अंशिका श्रीवास्तव	30-31
8. पिता का साथ	अंकिता पांडेय	32-33
3.नाटक		
1. गोस्वामी तुलसीदास	संस्कृति कुशवाहा	35-38
2. बंटवारे की आग	चाँदनी कुमारी	39- 44

4.प्रमुख साहित्यकार

1.सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय	आकांक्षा मिश्रा	46-47
2.हरिवंश राय बच्चन	प्राची सिंह	48-50
3.सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	नेहा पांडेय	51-53
4. धूमिल	अनुपमा त्रिपाठी	54-56

5.संस्मरण

1. पिल्लू	संस्कृति कुशवाहा	58-59
2. बुचानी	आकांक्षा मिश्रा	60-62
3. दादी	संजना पाठक	63-64

6.यात्रा संस्मरण

1. स्वतंत्रता की पहली उड़ान: मेरी खेल यात्रा	अनुपमा त्रिपाठी	66-67

7.निबंध

1. जलपान गृह	साक्षी पाल	69-70

8.रेखाचित्र

1. संघर्ष	पूजा यादव	72-73

9.साक्षात्कार

1. प्रोफेसर आशा यादव (हिन्दी विभागाध्यक्ष)		75-78

10.यू०जी०सी० नेट सिलेबस (हिन्दी)	**79-84**
11. शैक्षणिक भ्रमण	**86-87**
12. विविध गतिविधियों की प्रकाशकीय	**88-89**

कविता

क्या है कविता ?

कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है।

(धूमिल)

युवा शक्ति

मान है, अभिमान है
हम युवा देश की शान हैं,
एक हैं, नेक हैं,
सूर्य से भी तेज़ हैं।

है संकेतों में धीर जो,
परिवर्तन के हैं ढ़ाल जो,
हैं शक्ति के मिशाल जो,
मिट्टी के समान जो,
हैं तीर के कमान जो,

है कण -कण में जिनके बदले की आसक्ति,
उन्हें कहते हैं युवा शक्ति,
जो अपने आज और कल को बदल पाएंगे,
ऐसे ही मनुष्य भविष्य के युवा शक्ति कहलाएंगे।।

प्राची सिंह
परास्नातक द्वितीय वर्ष

किन्नर की आत्मकथा

सुकून तेरे आंचल की, कभी मैं जान न पायी

मैं लड़की हूं या लड़का, कभी पहचान न पायी

परिवार से लड़ी, लड़ी मैं समाज से,

अफसोस फिर भी कभी जीत न पायी ।

न जाने कहाँ भटक- भटक कर बड़ी हुई

न जाने किस-किस दरवाजे जाकर खड़ी हुई

आँखों में न कोई भविष्य, न उम्मीद शेष,

समाज और नियति की कठपुतली बनकर पड़ी हुई।

नाची! सिर्फ नाची, सबके सामने

जैसे नचाया विधाता, जिसके सामने

न मान, न अपमान, अब कुछ भी नहीं मुझमें

इंसान बनाके, पत्थर बनाया सबके सामने।

मैं न स्त्री, न पुरुष सही, मगर इंसान हूं,

तेरे अस्तित्व का अंश न सही, पर अपनी पहचान हूं।

रही भटकती सदा भविष्य के ऊहापोह में

जग का कोई न मिला हृदय के गुहाखोह में

मैं तड़पती रही जीवन भर, पर रही अपूर्ण सदा ही,

अपने पूर्ण जीवन के मायामोह में।

अब बस करो रहने दो हमें भी
सम्मान की रोटी खाने दो हमें भी

स्वकर्म, स्वधर्म चुनने दो हमें भी

जीने दो! जीने दो!! सुख से मरने दो हमें भी||

संस्कृति कुशवाहा

परास्नातक द्वितीय वर्ष

बलात्कार

मैं पूछती हूं कपड़ों की कितनी
परते चढ़ाने पर रेप नहीं होगा?
उम्र के कितने बीत जाने पर रेप नहीं होगा?
स्त्री के कितने कुरूप होने पर रेप नहीं होगा?

इंसानियत शर्म से चूर -चूर हो गई,
जब एक लड़की फिर बलात्कार का शिकार हो गई।
नहीं रुकती ये दास्तां रूह को जार -जार करने की,
हर गली, हर नुक्कड़ पर दरिंदगी की हद पार करने की।

वैसे तो मंदिरों में देवी बना पूजा जाता है उन्हें,
वहीं अकेला देख अपना हमबिस्तर समझा जाता है उन्हें।

डराते, नोच खाते है उन्हें
गिद्धों, कुत्तों और भेड़ियों की भाँती,

और वह चिल्लाती रह जाती की, रहम करो मुझपर असहाय की भाँति।

दामिनी, निर्भया और ना जाने कितनी ही लड़कियां,
शिकार हुई इन दरिंदों का,
लड़कियाँ तो छोड़ों ये छः महीने की बच्चियों को भी नहीं छोड़ते।

फिर लोग बदलते हैं स्टेटस, डीपी
और शुरू हो जाती है कैंडल मार्च,
कुछ धरने पर बैठते हैं,

तो कुछ सरकारी दफ्तरों के आगे।

शोक में डूबी सरकार

जैसे सच में बहुत दुःखी हो।

फिर भी गलती निकलती है लड़कियों की,

शायद छोटे कपड़े पहने होंगे

अकेले घूम रही होगी,

या मिलती होगी लड़कों से।

आख़िर में पकड़ भी लिए गए मुजरिम तो,

तारीखों का सिलसिला शुरू हो जाता है।

कोई कुछ नहीं करता

चार दिन बातें बनाता है,

और कह देते हैं

हमें क्या कौन सा हमारे घर में हुआ है?

क्या करें अब बेटियाँ?

क्या पैदा होना छोड़ दे?

क्यों भूल जाते हैं लोग

जन्मे तुम औरत से ही हो,

बिन औरत धरती पे जन्म कैसे पाओगे?

क्या बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का

नारा इस दरिंदगी के लिए लगाया जाता है।

बस करो अब रुक जाओ

भेंट ना चढाओ बेटियों को,

इंसानियत ना फिर से शर्मशार हो

इंसानियत ना फिर से शर्मशार हो।।

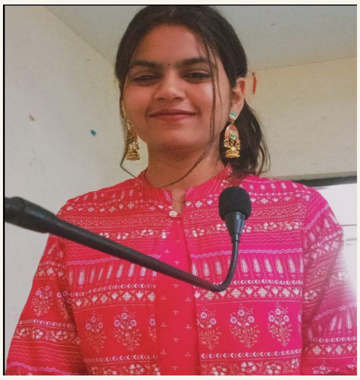

रिशिता

परास्नातक द्वितीय वर्ष

माँ मुझे गर्भ में ही रहने दो

माँ मुझे गर्भ में ही रहने दो,
इस सृष्टि का भार ना सहने दो,
माँ मुझे गर्भ में ही रहने दो।

गर्भ में थी तो क्यों रखा गया मेरा इतना ध्यान,
जब बाहर आकर मुझे होना ही था कुर्बान।
इन निर्मोहियों को इतना भी नहीं था ज्ञान?
छीन लिया जीवन उससे, जिसपर आश्रित सारा विहान।।
बहुत सह लिया कष्ट अब ना सहूंगी,
इन निर्मोहियों की सारी हरकत प्रभु से कहूंगी।
पर इससे पहले उनसे भी पूछूंगी-
कि जब आपको मालूम ही था, कि काटों से भरा है यह संसार,
जिसमें बेटा वैभव, तो बेटी है मृत्यु की हकदार।
तब आपने मुझे बेटी क्यों बनाया...?
बनाया भी तो, इन हत्यारों के घर क्यों जाया?
अब मैं लेती हूं एक संकल्प
नहीं बनने दूंगी बेटी को कोई विकल्प।
मैं रचूँगी एक नया इतिहास
और दूंगी अपनी बेटी को इतना प्यार और अधिकार,
कि फिर न कोई बेटी कह सकेगी,
माँ मुझे गर्भ में ही रहने दो
माँ मुझे गर्भ में ही रहने दो,
इस सृष्टि का भार न सहने दो।।

तनूजा मिश्रा

परास्नातक द्वितीय वर्ष

प्रकृति

प्रतिक्षण सूरज स्वयं जल कर भी
देता हमें उजाला है।
ठंड में जब देह कांपे
तब मिहिर ताप ने संभाला है।
सागर भी तो नदियों को
अपने अंतर में समाता है।
साथ -साथ रहना सीखे,
सहिष्णुता का तो राज बताता है।

पर्वत भी अविचल से स्थित होकर,
हमें अटल रहना सीखाते हैं।
जो होते है शांत और गंभीर,
जगत में वही श्रेष्ठ कहलाते हैं।

दरिया भी खुद्दार बड़े हैं,
मार्ग स्वयं का खुद बनाते हैं।
सतत् रूप से बढ़ना आगे,
आत्मनिर्भरता का ही गीत सुनाते हैं।

शीतल जल और प्राणवायु,
उपलब्ध प्रकृति कराती है।
समर्पण अपना सम्पूर्ण कर -कर,
अपनी ममता हम पर लुटाती है।

धारणीय विकास की ज्योत जलाकर
भोगवादी संस्कृति को आग लगाकर,
सम्पूर्ण वृक्ष बचाना है।
स्वच्छ पर्यावरण सिर्फ खुद को नहीं
बल्की,
भावी पीढी को दिलाना है,
भावी पीढी को दिलाना है।।

शालिनी मिश्रा

परास्नातक द्वितीय वर्ष

आँगन से आँगन तक

सज़ल नयन से देख रही वह, घर का हर कोना -कोना,

आई स्मृति भास हुआ जब, कुछ भी ना अपना होना।

छोड़ रही वह क्षण भर में ही, बचपन, बीते आँगन को,

रहा न उसका कुछ भी अपना, छोड़ रही जब परिजन को।

लो छूट गया बचपन जहां बीता, छूट गई सखियाँ सारी,

हाँ छूट गया माँ का आंचल, है रूठ गई गलियां सारी।

रोई माता...., रोई बहना..., रोई सखियाँ सिसक- सिसक,

हो गई योग्य वह नन्हीं गुड़िया, जो खेला करती थी फुदक -फुदक।

सजल नयन से विदा लिया, गालों में हल्की लाली थी,

मृदु सुख की कल्पना में ही, आनंदमयता कितनी प्यारी थी।

जब छूटा माता का आँचल, तो पिया ने बहियाँ थामी थी,

काँधे पर सिर रखकर रोई, उसकी भी अजब

कहानी थी।

गृहलक्ष्मी बन कर आई जब, वह सुंदर नव आलय में,

नव सखी मिलि, नव मात मिलि, आ गई चमक तब नैनन में।

नव सखी ने हर्ष से अंक भरा, नव मात ने उसको सिखलाया,

हैं नियम यही, दस्तूर यही, फुदकी मैं भी बंध आज गई।।

शालिनी कुमारी

स्नातक तृतीय वर्ष

प्रेमचंद जयंती विशेष

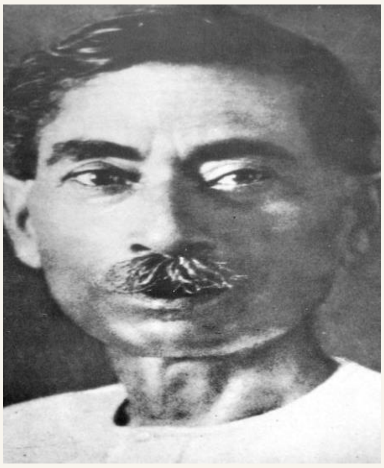

गांव के हर घर में,

एक अभागा नैतिकतावादी होरी

अभी भी जीवित है।

और होरी होना सामान्य बात नहीं है

उसे हिम्मत दिलाने वाली,

निर्भीकता से अपनी बात रखने वाली

उसकी पत्नी धनिया भी है,

हर घर में एक गोबर है,

जो कभी-कभी लीक से हटकर सोचता है।

बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले मेहता भी हैं,

उसी बुद्धिजीवी वर्ग को

मूक कर देने वाली मालती भी है,

और अमरपाल सिंह जैसे कुछ गिरे हुए जमींदार भी हैं।

भले मानुस पंडित दाता दीन भी है,

बस समय और परिस्थिति थोड़ी अलग है।

मैं सीधा -सीधा कहूँ तो गोदान के सारे किरदार

मिल जायेंगे आज भी गांव में,

बस कोई प्रेमचंद नहीं है ।

जो उजागर कर सके,

इस नए युग के कृषकों की वेदना को,

कर्ज़ की रस्सियों में लटक

रही किसानी चेतना को।।

वन्दना गुप्ता

स्नातक तृतीय वर्ष

आज का भारत

आज भारत देश हमारा,

जला रहा विश्व के रजत-पटल पर,

शांति सद्भावना की दीप निराला।

देकर विश्व को अपना सनातन ज्ञान
विज्ञान,

बढ़ा रहा जग में योग आयुर्वेद का
मान,

वसुधैव कुटुम्बकम का नारा,

भारत ही नहीं सम्पूर्ण धरा है घर हमारा

अखिल जगत को दिया एकता बंधुत्व
भाईचारे का ज्ञान।

विश्वगुरु के रूप में हमारी पहचान,

हम उस देश के वासी हैं,

जहाँ राम -रहीम मिलकर मनाते होली
दीपावली ईद रमज़ान।।

स्नेहा सिंह

स्नातक तृतीय वर्ष

नारी शक्ति

उठो जागो नारी
नव युग का निर्माण तुम्हें करना है
स्वतंत्रता की लड़ाई में,
प्रगति का पत्थर स्वयं तुम्हें ही बनना है।

हे नारी! उठो जागो
तुम स्वयं को अबला ना समझो
तुम्हीं हो दुर्गा, तुम्हीं हो काली
तुम्हीं भवानी
और तुम्हीं हो रानी लक्ष्मीबाई,

तोड़ दो परतंत्रता की सीमाओं को
खुद को साबित करो,
भर दो अपने पंखों को ताकत से
और एक नई उड़ान भरो।

तुम जननी हो संपूर्ण जगत की
सभ्यता की हो तुम प्रतीक नारी
अपने को बेबस ना समझो,
हो तुम अनन्त वीर नारी।

तुम्हें नव- इतिहास रचना है,
अपने कर्मों से
सत्य की मार्ग दिखलाने वाली!
तुम रामायण की सीता हो नारी।

नर के समान ही तुम भी हर पद की सच्ची अधिकारी हो नारी।
उठो जागो नारी
नव- युग का निर्माण तुम्हें करना है||

रुबी सिंह
स्नातक तृतीय वर्ष

कहां? नौकरी सरकारी है?

जहाँ देखिये बेकारी है,
सबपे छाई लाचारी है,
पढ़ लिख कर सब ठोकर खांए,
कहां? नौकरी सरकारी है।
जिसको देखो भाग रहा है,
रात- रात भर जाग रहा है,
फिर भी हाथ न ढ़ेला आता,
गा अपना ही राग रहा है,
काम नरेगा में मिल जाए,
परधान का बड़ा अभारी है,
अम्मा मियाँ थोड़ा तो सोचो,
कहाँ? नौकरी सरकारी है।

बिना सिफारिश नहीं नौकरी,
बिना घूस के बात नहीं,
नहीं जिन्होनें घूस दिया हो,
ऐसी कोई जात नहीं,
छोटा -मोटा धंधा कर लो,
जो सर पे ज़िम्मेदारी है,
बड़का भैइया जाने भी दो,
कहां? नौकरी सरकारी है।

डिग्री -विग्री गर्दा खाए,
भूले से न काम ये आए,
फार्म भरो पंच सौउवा जाए,
तंगी में भंगी और बनाए,
परिणाम परीक्षा बिन आ जाए
ऐसा देश चमत्कारी है,
कहां? नौकरी सरकारी है।

सुचिता कुमारी
स्नातक तृतीय वर्ष

मंजिल

मंजिल को पाने आया हूं, मंजिल को पाकर जाऊंगा,

चाहे गरजे बादल या फिर बिजली ही चमके।

आँधियाँ हो घनी या बारिश घनघोर बरसे,

माना की रास्ते काँटों से भरी है,

उन सभी को हँसते- हँसते पार कर जाऊंगा,

तुम कितनी भी कोशिश कर लो मुझे गिराने की,

मैं गिरते-गिरते खुद ही संभल जाऊंगा।

डरता नहीं चुनौतियों से मैं क्योंकि

जज़्बा है मंजिल को पाने की,

रुकना नहीं, झुकना नहीं बस

मंजिल की ओर बढ़ते चले जाना है,

मंजिल को पाने आया हूं, मंजिल को पाकर जाऊंगा।

तनिषा यादव

स्नातक तृतीय वर्ष

बढ़ते चलो

अरे! थक गये क्या तुम?

अरे! रुक गये क्या तुम?

अभी तो तू मंजिल की ओर आगे बढ़ा ही है,

अभी तो थोड़ा ही चला है,

अरे! भूल गये क्या तुम?

स्वामी जी के उस व्यक्तव्य को,

लक्ष्य प्राप्ति से पहले रुको नहीं तुम।

संघर्ष से डरकर थमों नहीं तुम,

जब ठान लिया तो डरो नहीं तुम,

फल की चिंता कर रुको नहीं तुम,

मंजिल को याद करो तुम,

चलते चलो, बढ़ते चलो, बढ़ते चलो. ..।

सौम्या यादव

स्नातक तृतीय वर्ष

स्वरचित

मैं कवि नहीं वो रवि बनूं,

जो पंक्ति से ही प्रकाश करे।

कविता मेरी वो सरिता बने,

जो ताल लय छंद प्रवाह करे।

कविता मेरी वो धरा बने,

जो धैर्य को आगाज करे।

सराह नहीं आशीर्वाद दीजिए,

हम निरंतर यही प्रयास करें।

वीनू पासवान

स्नातक तृतीय वर्ष

कहानी

(कुछ अनकही)

अभिलाषा

यह कहानी सोनपुर नामक गाँव की है। जहां एक मध्यवर्गीय छोटा सा परिवार बड़ी ही प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन कर रहा था। शैलेंद्र और रेनू को 10 वर्षों की प्रतिक्षा के पश्चात एक संतान की प्राप्ति हुई थी। जिसका नाम उन्होंने मोहिनी रखा था। उसका रूप और व्यक्तित्व भी उसके नाम के ही समान सबके मन को मोहित करने वाला अर्थात आकर्षित करने वाला था। मोहिनी बचपन से ही बड़े लाड़-प्यार से पली-बड़ी थी परंतु उसके मन में किसी भी प्रकार का अहंकार नहीं था, वह एक सहृदय बालिका थी। धीरे-धीरे समय बीतता गया मोहिनी ने माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर ली थी, अब वो उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्ति के लिए गाँव से दूर शहर जाना चाहती थी परंतु उसके माता-पिता अपने आँखों के तारे को अपने से अलग अकेले शहर भेजने से डर रहे थे। मोहिनी के अत्यधिक अनुनय- विनय करने पर वे राज़ी हो गए।

मोहिनी का नामांकन वो शहर के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में कराते हैं और उसी विश्वविद्यालय के छात्रावास में मोहिनी का दाखिला भी हो जाता है । अब मोहिनी पहली बार अपने माता-पिता से दूर अकेले किसी अन्य शहर में थी, माता-पिता को सदैव उसकी चिंता सताती रहती थी। सारे पहर उसी के बारे में सोचा करते, मोहिनी को भी उनकी याद आती! छात्रावास की कुछ लड़कियों को देखकर यदि कभी मोहिनी का चित्त चंचल हो आता तब घर से निकलते वक्त अपनी माँ की आंसू भरी वो ऑख उसके नजरों के सामने घूम जाती , और माँ द्वारा विदाई पर कहे गये वो शब्द उसके कानों में गूंज उठते कि “ बेटा तुम इस बात को सदैव याद रखना कि ' *तुम हमारा गुरूर हो।*'” माँ द्वारा कहे गये ये शब्द मोहिनी को गुरु मंत्र के समान अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने को प्रेरित करते और छात्रावास की कुछ लड़कियां उसकी प्रेरणा बनी। मोहिनी विश्वविद्यालय में हो रही प्रत्येक प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती और

उसे जीतने का पूरा प्रयास करती। मोहिनी के इस प्रतिभा ने सभी शिक्षक -शिक्षिकाओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। उसका लक्ष्य बहुत पहले से ही निश्चित था आई.ए.एस बनना। वो किसी से बिना कुछ कहे निरंतर उसकी तैयारी में लगी रहती। ये सपना उसने दसवीं की परीक्षा के पूर्व ही देख लिया था। तब से आज तक वो निरंतर परीक्षा की तैयारी में लगी रहती। उसकी प्रतिभा और लगन को देखकर विश्वविद्यालय की एक शिक्षिका ने भी उसका मार्गदर्शन किया और उसे उसके सपनों के एक कदम और निकट पहुंचाया। अब वो घड़ी आ गई जब मोहिनी को अपने सपने को साकार करने के लिए प्रथम परीक्षा देनी थी। ये सपना अब सिर्फ मोहिनी का सपना नहीं था अपितु ये उसके माता-पिता तथा उसकी शिक्षिका का भी सपना बन गया था। मोहिनी का अपने सपनों को साकार करने का यह प्रथम प्रयास था जिसमें वो असफल रही, कुछ त्रुटियों के कारण उसका चयन नहीं हो पाया। उसका आत्मविश्वास कमजोर पड़ गया, वो हताश हो गई | लेकिन कुछ ही क्षणों के पश्चात उसके अंतर मन से आवाज आई," *क्या यही था तुम्हारा सपना? क्या तुमने परीक्षा के प्रथम चरण में ही हार मान ली? क्या यही था तुम्हारा आत्मविश्वास? क्या हार मानने के लिए ही तुमने अपने माता-पिता से मिन्नतें की थी?"* जिसके पश्चात मोहिनी का कमजोर और डगमगाता हुआ आत्मविश्वास एक नई ऊर्जा के साथ पहले से और अधिक सुदृढ़ हो गया और वो अपनी त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए दोगुने लगन से तैयारी में जुट गई। जिसके फल स्वरुप दूसरे ही वर्ष मोहिनी परीक्षा के तीनों चरणों में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुई। वो अत्यंत प्रसन्न थी। अल्पायु में ही उसने जो सपना देखा था आज वो सपना साकार हुआ। आज मोहिनी ने अपने माता-पिता तथा अपने विश्वविद्यालय का नाम रौशन किया है।

इस कहानी का तात्पर्य यह है कि जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए, प्रयास से सब कुछ संभव है। इस संदर्भ में यह पंक्ति प्रसिद्ध है कि-

"करत- करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान।।"

~तनूजा मिश्रा

परास्नातक द्वितीय वर्ष

बदलाव

रोज सुबह की तरह आज भी नन्हीं कीर्ति पेड़ पर बैठकर अपनी मासूमियत भरे नजरों से टुकुर-टुकुर अपने गॉव का नजारा देख रही थी, लेकिन उसके चेहरे पर वो खुशी आज न थी, जो हर रोज दिखा करती थी। क्योंकि उसे पता था कि अब उसे इस गॉव को छोड़कर शहर पढ़ाई के लिए जाना है। उसके मन में तरह-तरह के ख्याल आ रहे थे.......... क्या शहर में मुझे गॉव जैसे खेत खलिहान हरियाली मिलेगी.........? चारों तरफ मिट्टी, बड़े-बड़े पेड़ों पर लटकते झूले, बकरियां माँ की कहानियां बाबा का दुलार............।

वह इतना सोच रही थी कि उसकी ताई घुघंट को मुंह में दबाए कुँए से पानी लेने आयी और बोली :-*"कीर्ति चल जा तेरी माँ बुला रही है...........*(मुंह टेढ़ा करते हुए) *पता नहीं इस छोरी को इतना क्या पढ़ाने की जिद कर रहे हैं, लड़की ही तो है चूल्हा चौका ही करना है। बेटा रहता तो कोई बात भी होती.........जैसे मेरा प्रकाश,वो भी खूब पढ़ेगा और हमारे बुढ़ापे का सहारा बनेगा"*(ताई की बात सुनकर चुटकी झट बोल पड़ती है) बुढ़ापे का सहारा तो मैं भी बन सकती हूं ताई.........अच्छा जाती हूं अम्मा के पास…खोज रही है मुझे.......|

ताई उसे अनसुना कर पानी भरने लगी। कीर्ति पेड़ से उतरी और दुखी मन से घर की तरफ चल दी।

वह चंचल कीर्ति जो हंसते- खेलते घर आती थी, आज उसके चेहरे पर मानो उदासी आ गयी थी। घर पहुंचते ही अम्मा बोली:- "कीर्ति तेरा सामान इस थैले में बांध दिया है। रास्ते के लिए चूड़ा गुड़ भी रख देता हूं तुझे तो पसंद है ना........" कीर्ति अभी भी उदास थी। वह अपनी बकरी के पास चप्पल उतार कर बैठ गयी।

तभी अम्मा ने कीर्ति को बड़े प्यार से समझाते हुए कहा – *"देख कीर्ति! माना कि यहां के जगह से अपने माँ बाबूजी से तुझे बहुत लगाव है लेकिन तू पढ़- लिख कर कुछ बन जा.......। हम बाकी गांव की लड़कियों की तरह तुझे नहीं पालेंगे। तुझे पढ़ने की, जीवन में कुछ करने की आज़ादी है। तेरी ताई*

को जो कहना है कहे..........। ऐसा कहते हुए माँ ने कीर्ति के गालों पर गिरते हुए ऑसू को पोछा और गले से लगा लिया"|

अगली सुबह कीर्ति की माँ ने कपड़े की पोटली में चूड़ा-गुड़ बाँधकर कीर्ति को पकड़ा दिया और उसे अपनी सिली हुई फ्रॉक पहनाकर तैयार कर दिया। कीर्ति ने माँ का पैर छुआ। मां ने कहा- जुग-जुग जियो कीर्ति खूब खूश रहो और मन लगाकर पढ़ना। अब जा ताई के पास जाकर आशीर्वाद ले लो।

कीर्ति ने सभी का आशीर्वाद लिया। ताई ने भी रुखे मन से सिर्फ कुछ बुदबुदा दिया। बाबू ने उसके सामान से भरी पोटली को सर पर रख एक हाथ से पकड़ा और कंधे पर गमछा डालकर दूसरे हाथ से कीर्ति का हाथ पकड़ कर निकल पड़े।

ट्रेन से सफर करते-करते कीर्ति को नींद आ गई और जब नींद खुली तो बाबूजी की गोद में सोई थी और बाबूजी भी खिड़की की तरफ देख कुछ उदास मन से सोच रहे थे तब तक ट्रेन रुक गई। कीर्ति जब बाबूजी के साथ ट्रेन से उतरी तो हाथ- मुंह धो चूड़ा-गुड़ खाकर अपने हॉस्टल के लिए निकल पड़ी।

वह पहली बार शहर आयी थी। एक-एक चीज बड़े ध्यान से देखती...... बड़ी-बड़ी इमारतें, बड़े-बड़े स्कूल, अच्छी-अच्छी दुकाने, पक्के मकान लेकिन यहां कुछ गांव जैसा ना था। ना ही हरियाली, लंबी पक्की सड़के दूर-दूर तक फैली थी।

अब कीर्ति का हॉस्टल भी आ गया। बाबूजी ने वहां कीर्ति का दाखिला करवा दिया। कीर्ति को ढ़ेर सारा आशीर्वाद देकर चल दिये। कीर्ति रोती हुई दूर तक बाबूजी को देखती रही।

कीर्ति अब पूरी मेहनत के साथ पढ़ने लगी। बाबूजी साल में तीन-चार बार उससे मिलने आते और वो अपने गांव के बारे में बहुत सवाल पूछती........*" बाबूजी क्या अब भी गांव में मेरा वो पेड़ है! जिस पर मैं बैठा करती थी। सारे झोपड़ियो के पीछे लुका छिपी खेलती थी।"* बाबूजी बस मुस्कुरा देते थे।

इसी तरह 20 वर्ष बीत गये। कीर्ति अब 25 वर्ष की हो चुकी थी। साथ ही एक अच्छी डॉक्टर भी बन गई थी।

आज वह बहुत खुश थी क्योंकि उसे अपने गांव जाना था। उसने जल्दी से सारा सामान एक बैग में रख लिया, वह उस दुपट्टे को भी रखी जिसमें मां ने सामान दिया था और निकल पड़ी अपने गांव।

रास्ते भर वह बहुत उत्साहित थी अपना गांव देखने के लिए, माँ बाबूजी से मिलने के लिए, उसका वह प्यारा सा पेड़........ प्यारी सी बकरी, हरा-भरा खेत, झोंपड़ियां।

यही सब सोचते-सोचते वह अपने गांव के करीब पहुंच चुकी थी। ट्रेन से उतरकर गांव की तरफ चल पड़ी। रास्ते में पक्की सड़क बन चुकी थी। बड़े-बड़े मकानो का निर्माण हो गया था और झोपड़ी का तो नामो-निशान नहीं था।

यह सब देख कीर्ति की ऑंखे ऑंसुओं से भर गई क्योंकि वह जिस गांव को छोड़कर गई थी वो तो यह गांव था ही नहीं……। वह अपने घर पहुंची तो देखा कि उसके घर का बंटवारा हो चुका है यह सब देखकर वह स्तब्ध होकर वहीं खड़ी रही। उसके ऑंखों में ऑंसू छलक पड़े।

तभी अंदर से माँ आयी और कीर्ति को इतने सालों बाद देख उसे गले से लगा लिया और पूछा तू कब आयी.......? अच्छा चल अंदर आ। अंदर पहुंची तो ताई की हालत बहुत खराब थी उनके बेटे प्रकाश ने उन्हें अपने घर से निकाल दिया था तब से ये कीर्ति के घर में ही रहती हैं। कीर्ति ने ताई के पैर छूकर कहा – *"ताई! अब मैं आ गई हूं ना! आपकी डॉक्टर कीर्ति आपको जल्दी ठीक कर देगी।"*

ऐसा सुनते ही उसके ताई के ऑंखों में ऑंसू आ गये और वह रोने लगी और बोली- कीर्ति काश तुझ जैसी मेरी भी बेटी होती तो आज मेरी यह हालत ना होती। बेटे को तो किसी चीज की कमी नहीं की फिर भी उसने......कहकर रोने लगी| चुटकी ने कहा:- हां ताई, मैं आपको बिल्कुल ठीक कर दूंगी । बात रही बेटी की तो बेटी भी बेटों के समान ही होती है।

कीर्ति सोचने लगी - आज के गांव के परिदृश्य में सब कुछ बदल गया है पहले जैसा बिल्कुल नहीं था। सिर्फ बदलाव नहीं हुआ तो लड़कियों की शिक्षा को लेकर। जबकि एक लड़की की शिक्षा उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण है और गांव के लोग आज भी सिर्फ लड़कियों को ही बोझ मानते हैं। गांव में तो बदलाव हो गये लेकिन पता नहीं लड़कियों को उनका हक मिलना, आजादी मिलना, अपने पैर पर खड़े होने का बदलाव कब होगा...............!

पूजा यादव

परास्नातक द्वितीय वर्ष

जागरूकता

दरवाजे पर खड़ी माँ अचानक से आवाज देती है:-*"ए जी जल्दी आइए न देखिये बिटिया को क्या हो गया"*, पिता हड़बड़ाता हुआ आया और कहा अरे! अभी तो बिल्कुल ठीक थी अचानक से क्या हुआ। पिता बेटी की हालत देखकर परेशान हो गया उसने फौरन ही अपने मित्र प्रकाश को फोन किया और जल्दी से उसे गाड़ी लाने को कहा ताकि वह बेटी को जल्द से जल्द अस्पताल ले जा सके। रघु की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उसके यहाँ साधन की कोई व्यवस्था नहीं थी। रीनू दर्द से कराह रही थी उसे साँस लेने में कठिनाई हो रही थी। रीनू की माँ नंदा यह सब देखकर इतनी परेशान हो गई कि वह बार-बार बेहोश हो जा रही थी। रीनू के एक बड़े भाई व बहन थी, जिन्हें रघु व नंदा ने मेहनत मजदूरी करके शहर में पढ़ने भेजा था।

प्रकाश के आने पर रघु व नंदा, रीनू को लेकर अस्पताल पहुंचे जहाँ पर उसे ऑक्सीजन लगाया गया, रीनू पूरी तरह डरी हुई थी उसका बदन बुखार से तप रहा था, माँ मन ही मन सोच रही थी कभी बीमार न होने वाली रीनू को अचानक क्या हो गया, वह महज 15 वर्ष की थी, गाँव के बच्चों के साथ हमेशा खेलती कुदती रहती थी। खबर मिलने पर रीनू के बड़े भाई प्रतीक व बहन रिया भी अस्पताल आ गये। तीन दिन के इलाज के बाद रीनू को अस्पताल से छुट्टी मिल गई और डॉक्टर ने कहा कि अब ये बिल्कुल ठीक है। रीनू की इस हालत की वजह से रिया अपने कॉलेज से छुट्टी लेकर घर पर रुक गई। कुछ दिन रीनू की हालत ठीक रही फिर अचानक से उसके पैरों में दर्द और गले में जलन होने लगा, रिया इस बार उसे हड्डियों के डॉक्टर के पास ले गई जहाँ पर सभी जाँच कराने के बाद डॉक्टर ने कहा ये ठीक है बस थोड़ी बहुत दिक्कत है जो व्यायाम करने से ठीक हो जायेगी। सब खुशी-खुशी घर वापस आये। प्रतीक भी परेशान था रिया ने उसे बताया चिंता की कोई बात नहीं है सब ठीक है। रघु और नंदा भी अब चिंतित हो गये। रिया भी अपने कॉलेज वापस चली गयी। सब कुछ अच्छा चल रहा था।

एक महीने बाद अचानक से फिर रीनू की तबीयत खराब हो गयी, उसके पेट में तेज दर्द होने लगा वह चिड़चिड़ी हो गयी। घर के समान फेंकने व नोचने लगी। रघु और नंदा इस व्यवहार से बहुत चिंतित हो गये। रीनू अजीब-अजीब तरह की आवाजें निकालने लगी फिर आधे घंटे बाद खुद ही ठीक हो गयी। गाँव के लोग अंधविश्वास से भरे होते हैं। उन्होंने सोचा रीनू पर किसी भूत-प्रेत का साया है। वे लोग उसे लेकर एक तांत्रिक बाबा के पास गये, जिन्होंने कहा इस पर एक प्रेत का साया है। आपको जब तक मैं कहूं यहाँ आना होगा। इस तरह वह उन्हें ठगने लगा। परेशान माँ-बाप बेटी

के ठीक होने के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। जब यह बात रिया को पता चली तो वह घर आई और मॉ-बाप को समझाया ये तांत्रिक पर भरोसा मत करो इसे किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाते हैं।

रिया रीनू को लेकर शहर गयी। वहॉं पर उसने रीनू को बहुत जगह दिखाया पर कुछ दिन आराम होने के बाद उसे ऐसा ही होने लगता था। एक दिन रीनू की तबीयत की बात सुनकर रिया की दोस्त अनन्या व उसकी बहन रिद्धिमा रीया से मिलने आये। रिद्धिमा ने रिया से अकेले में बात करने को बुलाया। रिद्धिमा एक मनो चिकित्सक थी। उसने कहा अनन्या ने मुझे रीनू की सारी मेडिकल समस्या को बताया। यह न तो कोई भूत-प्रेत का साया है न ही हड्डियों व पेट का रोग है। यह एक मानसिक बीमारी है जो धीरे-धीरे बढ़ता है, कुछ हालात को देखकर बच्चों के मन में नकारात्मक धारणा बन जाती है और वह उन पर इस तरह हावी हो जाती है कि समझना मुश्किल हो जाता है। रिया ने अपने भाई प्रतीक को बुलाया तीनों ने बात किया। रिद्धिमा ने बताया इसे मेडिकल साइंस में OCD (अनियंत्रित जुनूनी विकार) कहते हैं। ये लक्षण आमतौर पर धीरे-धीरे शुरू होते हैं और इनमें बदलाव होते रहते हैं। इसमें मरीज लगातार खुद को कुछ करने से रोक नहीं पता है, बाध्यकारी व्यवहार करता है। सामाजिक अलगाव या जरूरत से ज्यादा सतर्कता बरतता है, बुरे सपने आते हैं, अचानक घबरा जाना आशंका या चिंता बनी रहती है। रिद्धिमा ने बताया कि यह इलाज से संभव है, पर आप सभी को उसे एक अच्छा माहौल देना होगा। उसके विचारों में जो नकारात्मकता है उसे सकारात्मक रूप में लाना होगा। अभी भी लोग इस बीमारी के प्रति पूर्णत: जागरूक नहीं है। यह सब हमारे आस-पास हो रही घटनाओं, घर परिवार का माहौल, अकेलेपन से होते हैं । OCD को ध्यान, योग आदि से भी दूर किया जा सकता है। ऐसे व्यक्ति को तनाव से दूर रखना चाहिए।

रिया व प्रतीक ने रीनू को मनोचिकित्सक को दिखाया समय-समय पर रिद्धिमा की सलाह से उसकी काउंसलिंग भी हो गयी। रिया अक्सर उसे मंदिर ले जाती और आरती में

शामिल करती क्योंकि मंदिर के घंटे की ध्वनियॉं व उनका कंपन हमारे मस्तिष्क को एकाग्र करने में सहायक होती है। रिया- प्रतीक ने सारी बातें माँ-पापा को बताया और कहा रीनू को जितना हो खुश रखने की कोशिश करें। आजकल घरों में अत्यधिक व्यस्तता के कारण बच्चों पर ध्यान नहीं जाता और वह अकेलेपन के कारण ऐसी बीमारियों का शिकार हो जाते हैं।

अंततः रीनू अब पहले से बेहतर है। रिया ने कहा यह आवश्यक है कि अपने परिजन, दोस्तों तथा रिश्तेदारों के बारे में इतना तो जरूर जान सके कि उनकी मानसिक हालत कैसी है। उनके जीवन में क्या परेशानी चल रही है। जीवन संघर्षों से भरा पड़ा है पर हमारा एक पल किसी की जिंदगी को सकारात्मकता से भर दें और उसे एक नई जिंदगी दें। तनाव ,अकेलापन, हद से ज्यादा सोचना व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और व्यक्ति इस तरह की अनियंत्रित जुनूनी विकार से ग्रसित हो जाते हैं। हमारा प्रेम, साथ, ख्याल उनकी जिंदगी को आसान बना देता है। रिया ने अपने कॉलेज के सेमिनार में यह कहा और कहते हुए उसकी ऑंखें नम हो गयी अंततः उसने कहा हमारा प्रेम व साथ हमारे अपनों के जीवन को और अधिक खुशनुमा बना सकता है। वहाँ पर रीनू भी उपस्थित थी वह रिया की बातों को सुनकर बहुत अच्छा महसूस कर रही थी, और पहले से बहुत ही बेहतर हो गई थी और रीनू ने भी प्रण लिया कि वह ऐसे लोगों की मदद करेगी और उन्हें भी एक सामान्य जीवन देगी।

ज्योति यादव

परास्नातक द्वितीय वर्ष

दहेज का लालच

यह कहानी एक सत्य घटना पर आधारित है जो कि वर्षों पहले जिला अंबेडकर नगर के बरोही पूरा पाण्डेय नामक गॉव में घटित हुई थी, 2018 की बात है, जब मैं हाई स्कूल में पढ़ रही थी, उस समय मेरे गॉव में एक अजीब सी घटना हुई, जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था। उस गॉव में एक प्रजापति परिवार रहता है। उस परिवार में पति-पत्नी रहते थे, पति का नाम शंकर था और पत्नी का नाम सुमित्रा । उस दंपती के तीन बेटे और तीन बेटियॉ थी । सभी बेटें और दो बेटियों की शादी हो चुकी थी। वह गरीब परिवार मेहनत मजदूरी करके अपने परिवार का गुजारा करता था।

उनकी छोटी बेटी चंदा का विवाह तय हुआ, लड़के वालों की मांग कुछ ज्यादा ही थी, दहेज में कुछ पैसे और एक मोटरसाइकिल की मांग हुई थी। चंदा की दोनों बहनों ने मिलकर उसकी शादी का पूरा खर्च अपने सर उठा लिया था। चंदा की शादी बड़े ही धूमधाम से की गयी। शादी के कुछ ही महीनों बाद चंदा के ससुराल वालों ने उसे प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। दहेज में दी गयी मोटरसाइकिल के कागज पर चंदा का नाम था। उसके पति की मांग थी की मोटरसाइकिल उसके नाम पर करवा दी जाए। जिसके कारण वह चंदा से कोई संबंध नहीं रखता था। इसकी शिकायत चंदा ने अपने मायके वालों से की। चंदा के पिता गॉव के प्रधान और कुछ वरिष्ठ लोगों को लेकर उसके ससुराल गये। वहॉ पर समझौता हुआ कि मोटरसाइकिल लड़के के नाम कर दी जायेगी। कुछ दिनों बाद मोटरसाइकिल लड़के के नाम कर दी गयी। इसके बावजूद भी चंदा का पति उसे प्रताड़ित करता रहा। वह चंदा को पसंद नहीं करता था, क्योंकि उसका गॉव के किसी लड़की के साथ प्रेम संबंध था। चंदा के मायके वाले उसे वापस कुछ दिनों के लिए ले आते हैं।

एक दिन की बात है चंदा की मॉं अपने मायके गयी हुई थी। घर पर चंदा और उसकी बड़ी भाभी अकेली थी। चंदा के पति का फोन आता है कि मैं तुमसे मिलना चाहता हूं। चंदा जो कि अपनी भाभी को बिना बताए पड़ोस की एक लड़की को बताकर चली गयी। उसका पति बाजार से थोड़ी दूर एक सुनसान जगह पर उसका इंतजार कर रहा था। चंदा के पहुंचने पर दोनों ने बाजार में जाकर कुछ खाया पिया उसके बाद वापस उसी स्थान पर आ गये। उसके पति ने उसके मौत का षड्यंत्र पहले ही रचा हुआ था। पहले तो उसे जहरीला इंजेक्शन देकर बेहोश कर दिया उसके बाद गला दबाकर हत्या कर दी। चंदा जब देर रात तक घर वापस नहीं आयी तो उसके परिवार वालों ने छानबीन शुरू कर दी।

अगले दिन सुबह लोगों द्वारा शव को देखा गया जिसकी सूचना पुलिस को दी गयी। पुलिस मौके पर आकर शव को अपने कब्जे में ले लेती है। दूर-दूर तक यह खबर फैल जाती है कि किसी विवाहित लड़की का शव बरामद हुआ है। चंदा के परिवार वाले थाने पर जाकर शव की पहचान करते हैं। पुलिस पोस्टमार्टम के बाद शव को परिवारीजन को सौंप देती है। गॉंव में मातम छा जाता है। चंदा के शव का अंतिम संस्कार किया जाता है। उसके पति पर मुकदमा दर्ज कर उसे जेल भेज दिया जाता है। किंतु चंदा के परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण वह मुकदमा नहीं लड़ पाते हैं और उसका पति जेल से रिहा हो जाता है।

दहेज प्रथा एक कुत्सित परंपरा है जिसने सदियों से समाज को श्रस्त किया है। चंदा जैसी न जाने कितनी लड़कियॉं दहेज की अग्नि में जलायी जा चुकी है। अतः हम अपनी बेटियों को शिक्षित करें, उन्हें स्वतंत्र और जिम्मेदार बनाऍं और इस दहेज नामक बीमारी को समाज से उखाड़ फेकें।

मानसी तिवारी

परास्नातक द्वितीय वर्ष

बेहतर विकल्प

पढ़ाई के इन दिनों लगभग हर रोज ढांबे पर खाना होता है रात्रि में मुखर्जी नगर में (शंकर ढांबे) पर भोजन का इंतजाम करता हूं। खाने का मैन्यू सेट है.......... हाफ़ दाल-रोटी, सलाद, कटोरी में सफ़ेद मक्खन........ और आखिर में खीर। लगभग हर रोज एक व्यक्ति मेरे टेबल पर आता है। मैं उसे वही मैन्यू बताता हूं।

..............बीते कुछ दिनों से वह मुझसे पूछने की जहमत भी नहीं करता। मैं बैठता हूं..... सलाद परोस देता है फिर एक-एक करके बाकी सामग्री भी ले आता है कल रात मैं ढांबे पर आकर बैठा चिरपरिचित बंधु जो हर रोज ऑर्डर लेता था वह कहीं दिखाई नहीं दिया मेरी नज़रें उसे तलाश रही थी। इतने में एक नौजवान लड़का टेबल पर आया और बोला- *"भोला भैया नहीं आये हैं सर। उनका तबीयत खराब था"* मुझे नहीं पता था जिस व्यक्ति को मैं रोज खाने का ऑर्डर देता हूं उसका नाम "भोला" है।

"आपका नाम क्या है?" मैं सामने खड़े नवयुवक से पूछा!

"हमारा नाम आकाश है।" उसने फ़ट से जवाब दिया।

शंकर के ढांबे पर अधिकतर कर्मचारी बिहारी हैं। नवयुवक का नाम आकाश को आका "स" कहना मुझे जचा नहीं। लड़का टिप-टॉप था। सूखी हुई कद-काठी। तेल से चुपड़े कंघी किये हुए बाल। सबसे बड़ी बात उसके जूते ऐसे चमक रहे थे माना कोई अधिकारी हो।

मैंने अपना मैन्यू बताने की शुरुआत की ही थी उसने मेरी बात काटते हुए कहा- पता है सर! सलाद.......दाल....... मक्खन..... मैंने उसकी ओर देखा..... मुस्कुराया...... और कहा...... पता है तो ले आईए। भूख के मारे जान निकल रही है। (वह किचन की ओर चला गया।)

कुछ ही समय बाद वापस आया बोला.... *‘‘सर। डू नॉट माइंड, एक 'बेटर ऑप्शन' है’’* | मैं एक क्षण अवाक् रह गया। आई डू नॉट माइंड बेटर ऑप्शन........मेरे सामने ढांबे का एक वेटर खड़ा था | किसी मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट से एम.बी.ए मैनेजर। हुलिया देखकर शक भी नहीं हो रहा था कि इसे अंग्रेजी आती होगी। मैं हतप्रभ था। *"क्या बेटर ऑप्शन है सर"* मैंने व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा। लड़के ने मैन्यू कार्ड उठाया बोला...... *‘‘आप वेज थाली लीजिए सर इसमें दाल, दो सब्जी, पुलाव, सलाद और खीर भी है....... और सर...... ये थाली आपको 20% सस्ता पड़ेगा’’*। लड़का एक सॉस में सब कुछ कहा गया। पहले डू नॉट माइंड.....बेटर ऑप्शन... यानी अंग्रेजी और फिर 20% यानी गणित।

कौन है ये लड़का। ध्यान से देखा वो वाकई बिल में 20% का अंतर था।

"क्या करते हो?" मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से उससे पूछा। *"यही काम करते हैं।"* उसने शालीनता से जवाब दिया। अब मेरे मन की जिज्ञासा कौंध मारने लगी मैंने पूछा-*" इसके अलावा क्या करते हो?"* *"यूपीएससी की तैयारी कर रहे हैं सर दिन में पढ़ते रहते हैं और ढांबे पर नाइट ड्यूटी रहता है।"* आत्मविश्वास भरी और आशा भरी आवाज में उसने फ़टाक से जवाब दिया।

बेटर ऑप्शन ले आओ मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

खाना आया बिल टेबल पर था और आकाश.....नहीं नहीं...आका "स" सामने खड़ा था एक लंबे अरसे बाद मैंने किसी वेटर को टिप नहीं दी। सच कहे तो मेरी टीप देने की हिम्मत नहीं हुई।

मेरे पास लग्जर का एक पेन था मैंने उसकी शर्ट की जेब में वह पेन लगा दिया उसकी ऑंखों की चमक देखने लायक थी।

एक वर्ग है, जो बेशक घोर गरीबी में जी रहा है। दाने-दाने का मोहताज है रोज कुआं खोद पानी पी रहा है। लेकिन फिर भी अपने लिए बेटर ऑप्शन खोज रहा है यह वर्ग दिन में किताबों में मुंह दिए सपनों की लड़ाई लड़ रहा है और रात में ढाबे पर खाना परोसकर "जीविका" की लड़ाई लड़ रहा है।....और जितता भी यही वर्ग है क्योंकि यह समस्या में नहीं संभावना में जीता है। इसके पास हारने को कुछ भी नहीं और जीतने को पूरी दुनिया है।

मैं कल रात भविष्य के एक प्रशासनिक अधिकारी को पेन भेंट कर आया हूं और सीख कर आया हूं परिस्थितियां जितनी भी विकट हो संघर्ष जारी रखना ही "बेहतर विकल्प" है।

आद्या सलोनी

परास्नातक द्वितीय वर्ष

कृष्णा

लंबे समय के बाद, कहें तो पूरे पन्द्रह वर्षों के बाद कृष्णा अपने चचेरी बहन पायल के साथ उसके विद्यालय गई। पायल अभी सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा पाँचवी की छात्रा है। कृष्णा ने भी इसी विद्यालय से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की थी। आज अचानक इतने वर्षों के बाद कृष्णा उस विद्यालय में पहुँची तो उसे इस विद्यालय से जुड़ी अनेक स्मृति याद आ रही है कि कैसे वह अपने साथियों के साथ इस पेड़ के पास बैठकर गपशप करती थी, खेलती थी.......। साथ ही उसे यह भी याद आ रहा था कि किस प्रकार इस विद्यालय के शिक्षक अपने कर्तव्यों से विमुख होकर हमेशा आमोद-प्रमोद में लीन रहते थे। कृष्णा को अपनी तीसरी कक्षा की घटना याद आ गयी कि वह अपने शिक्षकों के हरकतों से तंग आ चुकी थी। कोई भी कक्षा यथासमय से संचालित नहीं होती थी, और ना ही विद्यालय में अनुशासन था।

इसी दौरान इस विद्यालय में खंड विकास अधिकारी श्री राकेश तिवारी का मुआयना के लिए आगमन हुआ। इनके आने की सूचना पाकर विद्यालय के प्रधानाध्यापक अजय कुमार मौर्य अत्यंत चिंतित हो गए थे और सभी कक्षाओं में जाकर उन्होंने यह घोषणा कर दी कि अधिकारी साहब के सामने अच्छे से पेश आना है, और उनकें सभी सवालों का जवाब देना है। प्रधानाध्यापक की घोषणा से सभी विद्यार्थी डर और सहम गये। करीब आधे घंटे के पश्चात अधिकारी साहब का हमारे विद्यालय में आगमन हुआ।

अधिकारी साहब सभी कक्षाओं में जाकर बच्चों से सौहार्दपूर्ण ढ़ंग से बात कर रहे थे और उनके पढ़ाई के बारे में पूछ रहे थे। सभी विद्यार्थी, प्रधानाध्यापक के बातों से डरे हुए थे, लेकिन स्वभाव से ही निडर कृष्णा ने सोचा कि यही उचित समय है अपनी शिक्षा के लिए आवाज उठानें का…..। कृष्णा ने अधिकारी साहब के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि इस विद्यालय में कक्षाएँ यथासमय से संचालित नहीं होती हैं। यहाँ के सभी शिक्षक गपशप और मटरगश्ती इत्यादि में लीन रहते हैं…..|

कृष्णा की बातों को सुनकर अधिकारी साहब अत्यंत क्रोधित हो गए थे और उनके क्रोध के शिकार प्रधानाध्यापक बने थे। अधिकारी साहब कक्षाओं को समय से संचालित करने का आदेश देकर चले गये। इसके बाद प्रधानाध्यापक ने कृष्णा को बहुत डाँटा कक्षाएँ भी समय से संचालित होने लगी थी। विद्यालय में अत्यंत कड़ाई होने लगी थी। प्रधानाध्यापक कृष्णा से बेरुखी से बात करते थे और कृष्णा को हतोत्साहित करने के लिए तमाम प्रकार का षड्यंत्र रचते लेकिन कृष्णा ने भी ठान ली थी कि प्रधानाध्यापक के षड्यंत्रों को असफल करना है। इसी प्रकार उन्होंने अनेक षड्यंत्र रचे, किंतु कृष्णा ने हार नहीं मानी।

जैसे-जैसे समय बीतता गया प्रधानाध्यापक के मन की कड़वाहट भी कम होती गयी और कृष्णा की पढ़ाई के प्रति तल्लीनता, लगाव को देखकर अन्तोगत्वा एक दिन ऐसा आया कि उनका कृष्णा के प्रति क्रोध, प्रेम में परिवर्तित हो गया। इन स्मृतियों को यादकर कृष्णा भावुक हो गयी और उसके आँखों में आँसू छलकने लगे, यह आँसू खुशी के हैं या दुःख के नहीं पता......। कृष्णा पायल को देखती हैं, पायल, कृष्णा को बाय..... बोलकर कक्षा में चली जाती है और कृष्णा घर........।

~शकुंतला

स्नातक तृतीय वर्ष

एक सजीव दुनिया

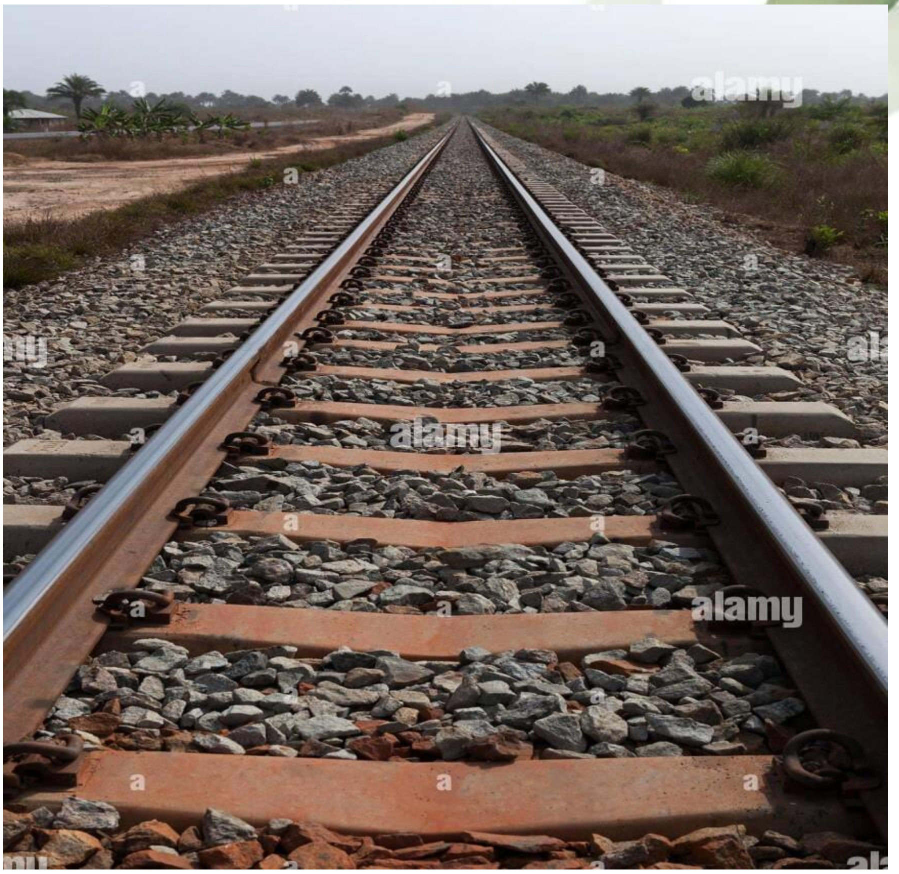

कितने वर्षों से इन रेलवे की पटरियों पर खड़े होकर फिर से एक तेज रेलगाड़ी का हिस्सा बनने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। हाँ एक समय था जब मैं भी अन्य डिब्बों के समान यात्रियों के संग भिन्न-भिन्न स्थानों की यात्रा करता था, जैसे शरीर के किसी हिस्से को खराब होने के कारण उसे शरीर से अलग कर दिया जाता है,उसी तरह मुझे भी अपंग भाग की तरह अलग कर दिया गया । सोचता हूँ वह मुझे ठीक भी तो कर सकते हैं, पर इस आधुनिक समय में जहाँ बुलेट ट्रेन जैसी पलक झपकते ही अपने गंतव्य पर पहुँच जाने वाली तकनीकी रेलगाड़ियाँ आ चुकी है, अब भला मैं उनके अनुकूल कहाँ रह गया हूँ…..।

किसी भी चलायमान व्यक्ति और वस्तु की यदि गति ही छीन ली जाए, उसके प्रात: उठने और परिश्रम करने की प्रेरणा ही लुप्त हो जाए, तब कैसा लगता होगा अब मैं यह स्थिति समझ सकता हूँ। परंतु समय के साथ मैंने अपने इस नए स्थिर जीवन को स्वीकार कर लिया। जीवन में उतार-चढ़ाव तो होते ही रहते हैं, नए बदलावों में सुंदरता देखना ही हमारी कला है और जो परिवर्तनों को स्वीकार नहीं करते, वह जीवनभर असंतुष्टि और शोक के भाव तले दबे रहते हैं।

जीवन में स्थिरता का भी अपना अलग आनंद है। हम अनेक स्थानों पर जाकर विविध प्रकार के अनुभव तो ले सकते, पर किसी वस्तु का गहन विश्लेषण, उसकी मर्मज्ञता, उसकी गुण भावना को तो स्थिर होकर ही समझ सकते हैं।

पहले तो मेरे लिए यह मात्र कुछ समय के लिए ठहरने का स्थान था, परंतु जब से यह मेरा निवास स्थान बन गया है तब से मुझे यह स्थान दुनिया का सबसे सजीव स्थान प्रतीत होता है। रात्रि और दिन में तो यहॉं कोई भेद ही नहीं है। प्रत्येक क्षण यात्रियों का आवागमन, चौबीसो घंटे माइक पर रेलगाड़ियों के समय की घोषणा होती ही रहती है। जैसे ही एक गाड़ी के प्रस्थान करने पर भीड़ कुछ कम होती है, वैसे ही दूसरी गाड़ी आते देख प्लेटफार्म पर पुनः हरकत होने लगती है। गाड़ियों के रुकते ही लाल कुर्ते वाले कुली सामान उतारने-चढ़ाने के लिए सजग हो जाते हैं, यदि सुबह के समय गाड़ी आती है तो "*आज की ताजा खबर!आज की ताजा खबर! हिंदुस्तान टाइम्स, सिर्फ दस रुपए ले लो सिर्फ दस रुपए........"* की ध्वनि सभी डब्बों में सुनाई देती रहती है, सभी अपनी धुन में मग्न रहते हैं। "चाय-चाय" का स्वर तो हमेशा गूँजता रहता है। रेलगाड़ी ठीक से रुक भी नहीं पाती कि लोग पहले से उतरने-चढ़ने के लिए संघर्ष करने लगते हैं और कभी इसी उतपाद में आपस में वाद-विवाद भी हो जाता है। हाँ पर इस स्थिति का अनुभव आरक्षित श्रेणी वालों को नहीं करना पड़ता है।

पर इतने कोलाहल के वातावरण में भी मिलन और बिरह के दृश्य मन को अनेक प्रकार के भावों से भर देते हैं। कहीं किसी के वर्षों बाद अपनों से मिलने का मर्मस्पर्शी दृश्य, तो कहीं नौकरी के लिए बेटे का परिवार से दूर जाने का ह्रदय विदारक दृश्य है। प्रतिदिन नए चेहरे के साथ नई कहानियां होती है, बस भाव वही होते हैं।

गाड़ी के छूटते ही धीरे-धीरे नमस्ते, गुडबॉय आदि अभिनंदन के शब्दों के साथ प्लेटफार्म एक बार पुनः खाली हो जाता है और पुनः कुछ क्षण के लिए उत्साह, शोरगुल, कोलाहल के स्थान पर शांति के भाव उत्पन्न हो जाती है। सच में ऐसे सजीव दुनिया के कारण ही हम जैसी निर्जीव वस्तुओं में जान आ जाती है।

अंशिका श्रीवास्तव

स्नातक तृतीय वर्ष

पिता का साथ

वैष्णवी की हॉस्पिटल से आज छुट्टी थी। वह अपने माता-पिता के साथ बैठकर सुबह की चाय का आनंद ले रही थी। वैष्णवी की माँ ने कहा *"वैष्णवी कल जो पार्सल आया था उसे देख लो क्या है उसमें"* वैष्णवी उठकर पार्सल ले आयी और देखने लगी पार्सल में शादी का एक कार्ड तथा एक पत्र था जिस पर लिखा हुआ था। *"आदरणीय रामस्वरूप जी मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा, यदि आपने अपनी दोनों बेटियों को पढ़ाने के लिए अपने घर में विरोध ना किया होता तो शायद मैंने भी अकांक्षा का विवाह समाज और परिवार के दबाव में आकर 18 वर्ष की उम्र में कर दिया होता और आज जिस गर्व एवं सम्मान की प्राप्ति मुझे अपने बेटी के नाम से होती है, ना होती। विनम्र आग्रह है कि अपनी बेटियों के साथ सपत्नी आइयेगा*

वैष्णवी के मन में सवालों की लाइन लग गई थी जो उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। तब वैष्णवी के पापा ने कहा, "तुम्हें अपनी दीदी के पढ़ाई के समय घर में जो विद्रोह हुआ था उसका पता ही होगा और जब मैंने घर वालों के खिलाफ जाकर तुम दोनों की पढ़ाई जारी रखी तब तो सबने रिश्ता खत्म कर दिया था मुझसे। पर जैसे-जैसे तुम लोग आगे बढ़ते रहे सब सही हो गया और हमारा परिवार फिर साथ हैं।" इतना कहकर वैष्णवी के पापा की आँखें नम हो गयी तभी वैष्णवी ने उन्हें गले लगा लिया और कहने लगी "अरे मेरे इमोशनल कम क्रांतिवीर पापा सेंटी मत होइये। और अब आकांक्षा की कहानी भी तो बताइए।"

वैष्णवी के पापा ने कहना शुरू किया "ये बात तब की है जब तुम एम.बी.बी.एस की पढ़ाई के लिये दिल्ली में थी। अकांक्षा के पिता ने घर तथा समाज की इन बातों के दबाव में की बेटी को पढ़ा-लिखाकर क्या करोगे? आगे चलकर तो इन्हें परिवार ही संभालना है। पढ़ाई में पैसे खर्च करने से अच्छा है दहेज के लिये जोड़ों जितना ज्यादा दहेज दोगे उतना अच्छा परिवार मिलेगा। पर अकांक्षा पढ़ना चाहती थी। वो रोते हुये मेरे पास आयी और बोली, *"अंकल आप ही पापा को समझाइये मुझे भी वैष्णवी और अस्मिता दी की तरह आगे बढ़ाना है"*। जब मैंने उसके पिता को समझाया तो वो कुछ सहज तो हुये परंतु अब भी वे शादी तोड़ नहीं रहे थे, तभी अकांक्षा ने बोला, *"पापा आप चाहते तो यही है कि मैं खुश रहूँ शादी के बाद। पर आपको लगता है अपने सपनों और आत्मविश्वास के टूटने के बाद मैं खुश रह पाऊंगी, बिल्कुल नहीं पापा। पापा आप तो मुझे दुनिया की हर खुशी देना चाहते हैं पर मुझे बस आपका साथ चाहिये पापा और अपने हिस्से का समय चाहिए।"* और फिर पिता का हृदय है कैसे न पिघलता, आज परिणाम तुम्हारे सामने है, हमें आइ.ए.एस, अकांक्षा की शादी का निमंत्रण आया है।

वैष्णवी ने अपने पापा के गले लगकर भरी हुई आवाज में कहा *"सच में पापा हर बेटी को सबसे ज्यादा अपने पापा का साथ चाहिए होता है, थैंक यू पापा"*।

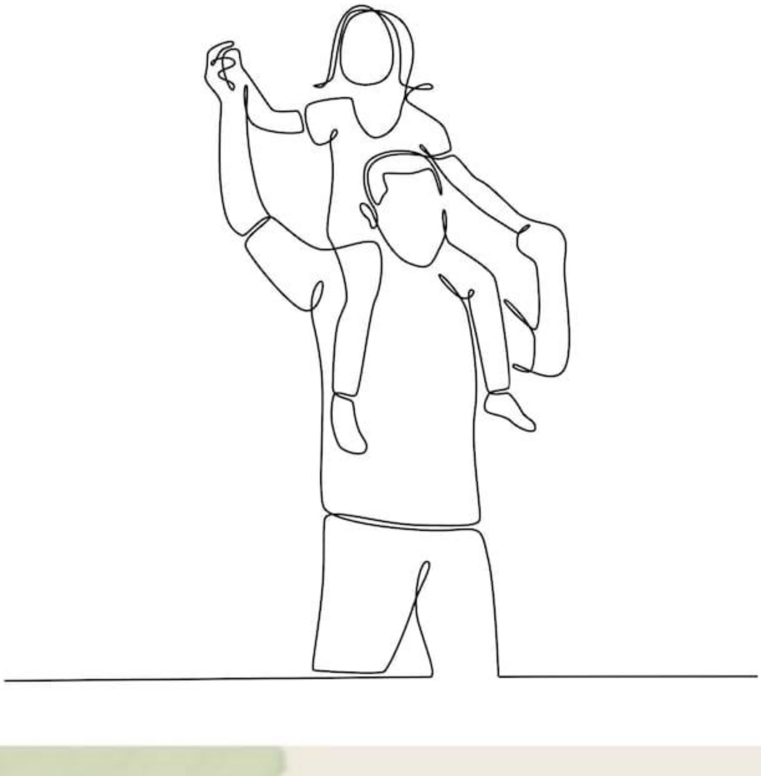

अंकिता पांडेय

स्नातक तृतीय वर्ष

नाटक

(जीवन एक अभिनय है।)

गोस्वामी तुलसीदास

प्रथम अंक

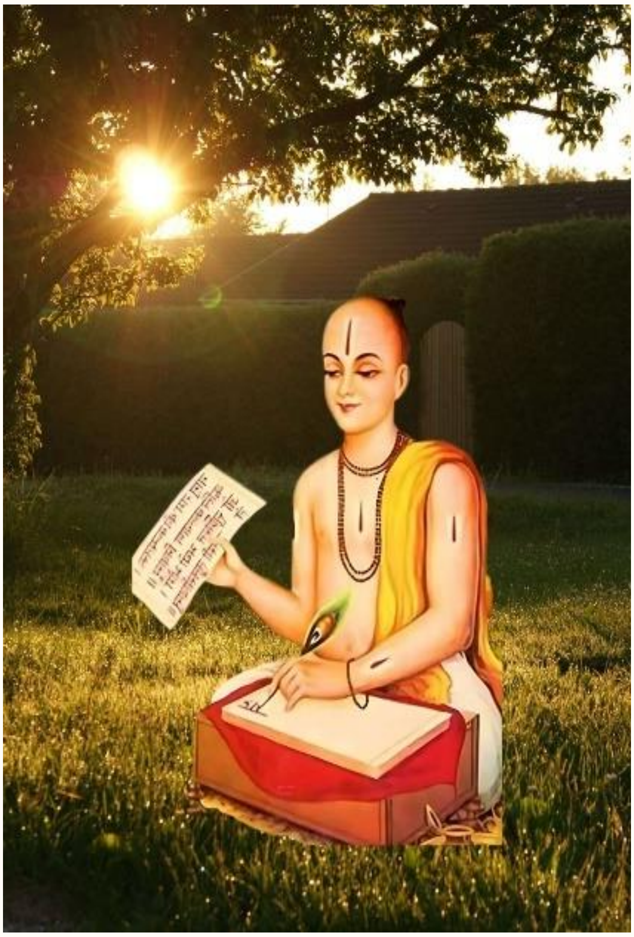

(प्रकोष्ठ में दीप जल रहे हैं। तुलसीदास भोजन के पश्चात रत्नावली से वार्तालाप कर रहे हैं।)

रत्नावली:- स्वामी आप मुझे अपने बचपन के बारे में क्यों नहीं बताते। मैंने कितनी बार आपसे पूछा है कृपया बताइए ना.....।

तुलसीदास:- रत्ने! क्या करोगी जानकर। छोड़ो व्यर्थ ही तुम्हें दुःख होगा।

(तुलसीदास उठने को होते हैं रत्नावली उन्हें जबरदस्ती बैठा देती हैं।)

तुलसीदास:- तुम मानोगी नहीं ना। ठीक है सुनो!!

मुझे जन्म देने वाली मेरी माँ हुलसी थी। लोग कहते हैं कि मैं अभागा था। इसलिए मेरी माँ चल बसी। मेरे पिता ज्योतिष जानते थे, इसलिए मेरे जन्म लेते ही उन्होंने मेरी कुंडली बनायी। अमंगल नक्षत्र में पैदा हुआ बालक माता और पिता दोनों के लिए अमंगलकारी होता है। मेरी माँ चल बसी थी इसलिए पिताजी को भी विश्वास हो गया कि जो मेरी छाया भी उन पर पड़ी तो.......... तब उन्होंने द्वार-द्वार जाकर भीख माँगने वाली चुनिया अम्मा के हाथों में मुझे रख दिया। उस भिखारिन ने मुझे गले से लगा लिया। मुझे सीने से चिपकाये चुनिया अम्मा द्वार-द्वार जा भीख माँगती। उन्हीं के गले से मैंने पहला स्वर सुना था।

(रत्नावली आर्द्र नेत्रों से तुलसीदास को दत्त चित्त होकर सुन रही थी।)

तुलसीदास:- चुनिया अम्मा ने मुझे बड़े ही प्रेम से पाला। परंतु निष्ठुर नियति को मेरा वह बाल सुख भी नहीं देखा गया। मैं पाँच वर्ष का था जब सर्पदंश से चुनिया अम्मा की मृत्यु हो गयी। काल ने उन्हें नहीं मेरे बचपन को डसा था। मैं अनाथ, असहाय, भूखा, प्यासा, दूसरों की कृपा पर आश्रित जीवन व्यतीत कर रहा था। नियति के इस क्रूर दृष्टि से रक्षार्थ स्वयं हरि स्वरूप मेरे गुरुवर का मेरे जीवन में प्रवेश हुआ।

पूज्य गुरुदेव स्वामी नरहरिदास ने मेरे जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल दी। तत्पश्चात प्रिये! तुम्हारा मेरे जीवन में प्रवेश हुआ।

(रत्नावली अवाक् और स्तंभित थी, अश्रु बहते-बहते अब सूख चले थे।)

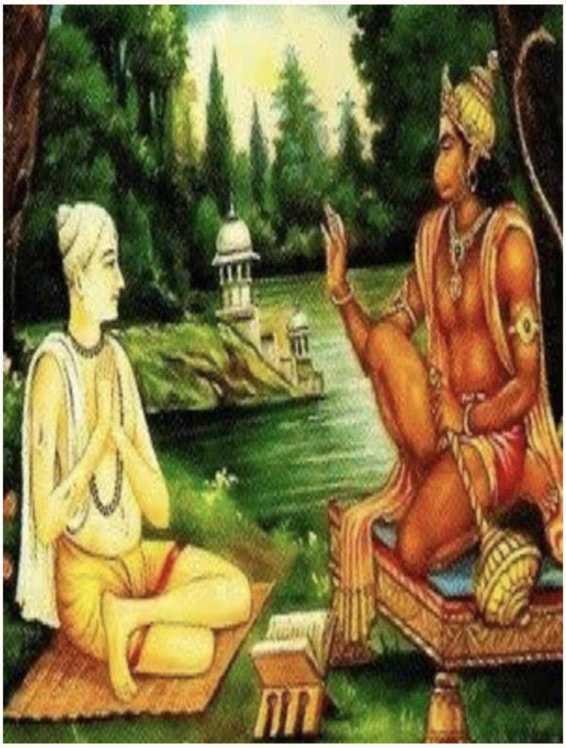

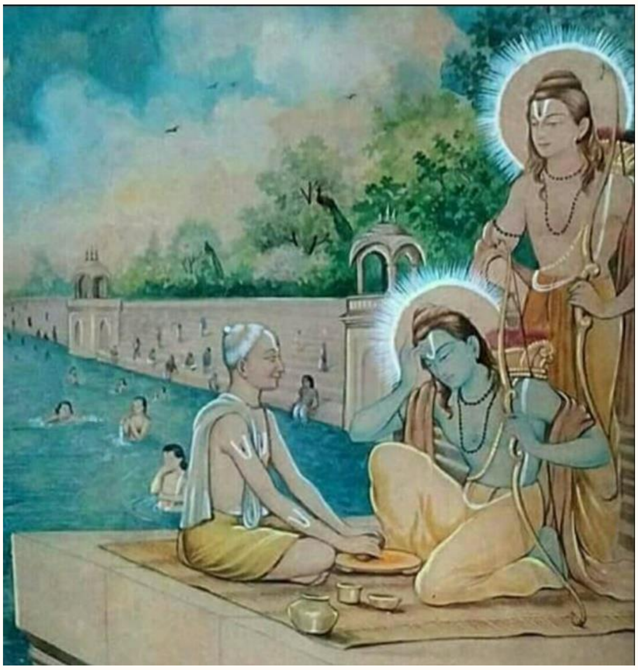

द्वितीय अंक

(कुछ दिनों बाद)

संध्या का समय है रत्नावली घर में अकेली है उसी समय उनके भाई का आगमन होता है।

रत्नावली:- अरे! भईया आप इस समय आइए-आइए बैठिए।

जगदीश:- बैठने का समय नहीं है बहन, पिताजी का स्वास्थ्य अत्यंत बिगड़ा हुआ है शीघ्र चलो।

रत्नावली:- अरे! स्वामी को तो आ जाने दीजिए।

जगदीश:- हमें रात्रि से पूर्व पहुँचना है बहन समय नहीं हैं।

(रत्नावली असमंजस में है क्या करें, कैसे बिना बताए जाए। उसने सोचा पत्र लिख छोड़ जाती हूं स्वामी परिस्थिति समझ लेंगे।) *(पत्र लिखने के बाद)*

रत्नावली:- चलिए! भईया!

(दोनों का प्रस्थान)

(कुछ देर बाद तुलसीदास का प्रवेश)

तुलसीदास:- रत्ना……. रत्ना! कहाँ हो तुम?

(कोई आवाज नहीं तभी उस पत्र पर तुलसीदास की दृष्टि)

(परिस्थिति समझ, फिर जाकर शय्या पर लेट गए।)

(वर्षा होने को थी। तुलसी को रत्नावली की स्मृतियों ने विचलित कर दिया। वे अपने ससुराल की तरफ चल पड़े।)

(वर्षा में भींगते-भींगते, काली अंधेरी रात में वे अपने ससुराल पहुँच गए और सीधे रत्नावली के कक्ष में खिड़कियों से घुस गए।)

(रत्नावली उस समय अपने शयन के लिए बिस्तर लगा रही थी। तुलसीदास को देख चौंक गई।)

रत्नावली:- आप!! यहां? इस समय??

तुलसीदास:- हाँ (*अपने गीले वस्त्र निचोड़ते हुए*) वो, तुम बिन रहा नहीं जा रहा था घर में। सो, मैं चला आया। (प्रसन्न मुद्रा में) क्यों तुम प्रसन्न नहीं हो? मेरे यहाँ आने से?

रत्नावली:- प्रसन्न……???

आप जानते हैं…..आपके इस कृत्य से कितनी जग हँसाई होगी। (*क्रोध में*)

तुलसीदास:- क्यों…? अपनी धर्मपत्नी की कामना में कौन सी लज्जा की बात…?

रत्नावली:- मेरे इस हाड़-माँस के शरीर से जितना आप प्रेम करते हैं न, उतना यदि अपने राम से किया होता, तो कब के भवसागर पार हो गए होते। (*क्रोध के बाद रत्नावली ग्लानि से मौन हो गयी*)

(*तुलसीदास का प्रस्थान*)

तुलसीदास अपने घर ना जाकर वन को प्रस्थान कर गए। वहाँ जा राम का ध्यान तथा उनके ही नाम का जाप व कीर्तन किया करते। ऐसा करते-करते वे चित्रकूट पहुँच अनेक वर्षों तक साधना लीन रहे।

अंततः दैवीय प्रेरणा से उन्होंने राम के सुंदर चरित्र को अवधि भाषा में लिखने का प्रयास किया॥

(***रामचरितमानस लिखकर सम्पन्न।***)

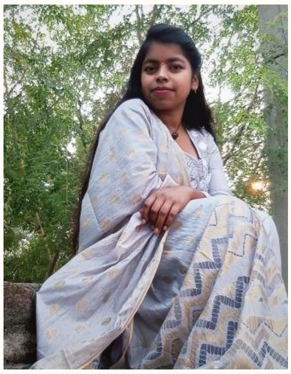

संस्कृति कुशवाहा

परास्नातक द्वितीय वर्ष

बंटवारे की आग

प्रथम अंक

(बिहार राज्य के कैमूर जिले में.. गर्मियों का मौसम है.. शाम ढलने को है। मुरारी के परिवार में बंटवारे हो रहे हैं, उनके बेटों की सहमति में विभिन्नता हैं....।उनके द्वार पर पंच और कुछ लोग आये हुए हैं। कुछ लोग द्वार के चबूतरे पर बैठे हैं, तो बाकी लोग खड़े हैं। पिता और बेटों में वाद -विवाद चल रहे हैं। मंझले बेटे कुलवंत का कहना है कि मुझे हिस्से की जरूरत नहीं है...।)

कुलवंत:- पिताजी! मैं जमीन-जायदाद में हिस्सा नहीं लूंगा। मैं खुद बनारस में घर-जमीन बना लिया हूँ, उसी में मैं सुखी हूँ।

दीपक:- *(बीच में ही टपककर.....)* नहीं पिताजी, क्या पता भईया बाद में हिस्से के लिए झगड़ने लगे, तो......।

कुलवंत:- नहीं मुझे ऐसी जरूरत नहीं है पिताजी आप सोहन भैया और दीपक को बराबर के हिस्से दे दीजिए।

पिताजी:- ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी।।

सोहन और दीपक बहुत खुश हुए कि चलो भाई अच्छा ही हुआ कम-से-कम एक हिस्सा तो नहीं देना पड़ेगा। तीन हिस्से के जगह पर अब केवल दो ही हिस्से लगेंगे। क्योंकि खेती-बारी तो थी नहीं, केवल घर के ही जमीन में हिस्से लेने थे, वह भी बहुत कम (डिसमिल) जमीन थी। और अब वहीं हुआ, जो होना था। दोनों भाइयों ने बराबर घर में हिस्से लिए और नये मकान बनवाये। मुरारी और उनकी पत्नी अपने छोटे बेटे दीपक के साथ रहने लगे। हर्ष और उल्लास के साथ-साथ समय-सरगम चलता गया.....।

कई वर्षों के बाद शहर से कुलवंत आता है। भला इस महंगाई के दौर में कोई

अपना हिस्सा यू हीं जाने देगा। अर्थात अब उसके मन में लालच (लोभ) की भावनाएं प्रस्फुटित होने लगी। अब वह दोबारा बंटवारा करना चाहता है। उसकी अब ये सहमति है कि इन दोनों भाइयों के नए मकान को तोड़ा जाय और उसके तीन हिस्से लगें।

कुलवंत:- मुझे भी अब हिस्सा चाहिए।

(माँ ये बात सुनकर हतप्रभ हो जाती हैं।)

बेटा, ये तुने अच्छा नहीं किया।

दोनों भाइयों में भी खलबली मच गई कि ये आज क्या कह रहा है, उस दिन तो कहा था कि हम सुखी हैं शहर में......।

कुलवंत:- अगर हमें हिस्सा नहीं मिला तो, हम पंचायत करेंगे और तोड़कर लेंगे।

दीपक:- जब बंटवारे हो रहे थे तो उस दिन क्या बोले थे.....? हमें नहीं चाहिए और आज...... ऐसा क्यों.......?

नन्हकु चाचा:- लगता है कुलवंत की बीवी ने गुरुमंत्र दे दिया हो...... *(हंसते हुए)* *(वहाँ उपस्थित कुछ लोग इनके बातें सुनकर मुस्कुरा देते हैं।)* *(नन्हकु चाचा कुछ मजाकिया टाइप के हैं।)*

कुलवंत :- (*ये बातें सुनकर*) नहीं, ऐसी बात नहीं है। मेरे भी तीन बच्चे हैं.....वे कहाँ जायेगे। उनके भविष्य के बारे में मुझे चिंता नहीं होगी तो और किसको होगी भला!!

दीपक:- तो आपको हिस्सा चाहिए....।

कुलवंत:- हाँ! और इतना ही नहीं माँ के गहनों में भी अब हिस्से लगेंगे।

माँ :- (*विस्मय होकर*) ओह....!

पिताजी:- ऐसा नहीं हो सकता। गहनों में हिस्सा नहीं।

दीपक:- देखा माँ भईया क्या बोल रहे हैं, भला ये भी कोई बात हुई।

माँ:- बेटा दुनिया की रीत ही ऐसी है। भाई-भाई का दुश्मन बन जाता है।

(झटाक् से कुलवंत दीपक को चटाक चांटा लगा देता है।)

कुलवंत:- चुप बे......!!

द्वितीय अंक

(दीपक के घर (मकान) को ढ़हाये जा रहे हैं। सोहन के घर को नहीं, क्योंकि कुलवंत उनसे मिला हुआ है..... उन्हीं के घर इसका भोजन बनता है। उससे मिलाप है। सुबह का समय है...... बच्चे स्कूल जा रहें हैं....।)

दीपक:- ये अन्याय कर रहे हो, अन्यायी भाई।

(*सर पर हाथ रखकर बैठ जाता है।*)

माँ:- हे भगवान! (*माँ बेहोश हो जाती है।*)

नन्हकु चाचा:- हें हें......

(*कुछ लोग माँ को संभालते हैं।*)

कुलवंत की पत्नी:- ये बुढ़िया नाटक कर रही है। इसको अभी हीं नाटक करना था! हुं......

नन्हकु चाचा:- अरे! कैसी औरत हो (यार) तुम......! कम-से-कम इस समय, इस दशा में तो अपने सास की इज्जत कर।

कुलवंत की पत्नी:- (*क्रोध में*) ओह.... इज्जत!

जाइये आपको यहाँ जज करने के लिए नहीं बुलाया गया है।।

(अब पूरे बंटवारे हो जाते हैं.... घर में, माँ के गहनों में और जो सरकारी जमीन में माँ-बाप अपने लिए घर बनाये थे, उसे भी कुलवंत पूरा लेकर ढ़हा देता है।)

हिस्सा लेकर कुलवंत पुन: शहर चला जाता है और अपना घर भी नहीं बनाता है। ढ़हे घर रह जाते हैं, शायद उस बार आये तो वो अपना मकान बनवाये।

(दीपक कुछ सोच कर रह गया...... अगर केस (मुकदमा) करेंगे तो लफड़ा होगा, आखिर उन्हें हिस्सा तो चाहिए ही था।)

(माँ इन सब तनावों से परेशान हो गई हैं.... उनके अंदर मानसिक तनाव इतना प्रबल हो गये हैं कि वे बीमार पड़ गई है। पिता भी इस दुःख से कुछ कमजोर पड़ गये हैं।)

पर्दे के पीछे से स्वर सुनाई देता है......

"दोबारा बंटवारे की आग........

जलाकर माँ-बाप की भावनाओं को कर दिया राख........।।"

माँ के इलाज के लिए डॉक्टर आये हैं।

डॉक्टर:- इनकी तो तबीयत और भी गंभीर होती जा रही है। (*दीपक से*) ये दवा लिजिए खिला दीजिए। शायद कुछ आराम मिल जाय।

और हाँ..... इन्हें अब बनारस (बी.एच.यू) में एडमिट कराइये, वहीं इनका अच्छे से उपचार हो सकेगा।

उपचार के लिए बनारस ले आया गया। जाँच-रिपोर्ट आने में एक-दो दिन लगेगा। माँ की तबीयत और बिगड़ गई। अब न उनसे चला जा रहा है और न बोला जा रहा था। उनका मुँह बिल्कुल एक तरफ की ओर घूम गया......।

दीपक:- लगता है माँ अब नहीं बचेगी...।

दीपक की पत्नी:- ओह! ये तो लकवा मार दिया इन्हें....।।

दीपक:- हूँ......।

दीपक की पत्नी:- अब इन्हें यहाँ नहीं दिखाइए। सुने हैं 'नयी बाजार' इसका इलाज अच्छे से होता है।

(अब यहाँ से वे लोग चल दिये माँ को लेकर)

माँ:- *(लड़खड़ाये हुए शब्दों एवं गीले स्वर में कहती हैं।)* कुलवंत क्यों नहीं आया यहाँ? वो भी तो इसी शहर में रहता है। *(और माँ की आँखों में आँसू भर आते हैं।)*

(अब वे लोग 'नयी बाजार' नहीं जाते हैं, किसी के कहने पर 'तरहनी' ले जाते हैं......।)

कुछ समय के लिए वहाँ की दवाओं से ठीक हो जाती है, लेकिन इस रोजमर्रा की जिंदगी से दीपक भी उब जाता है और वहाँ से एक-दो बार दवा लाकर दे देता हैं। लेकिन तीसरी बार वहाँ उपचार के लिए नहीं जाता है..... और वो भी अपने काम पर जाने लगता है।

तृतीय अंक

(माँ खटिये पर पड़ी हुई हैं। उठा नहीं जाता, अब दवा आना बंद हो गये हैं। अब वे केवल कुछ एक या आधी रोटी खाकर जीती हैं....। दीपक की बेटियाँ खाना खिलाती है... वो भी छोटी बेटी 'बीतन' ज्यादा ख्याल रखती है, जो सात-आठ साल की होगी। दीपक की पत्नी और उसकी बड़ी बेटी सीता माँ को उठाकर स्नान कराती है.....।)

माँ:- *(तेज से प्यास लगी है)* सीता..... पानी दे.....।

(सीता ने नहीं दिया...... सबसे बड़ी बहू सुन रही थी, लेकिन उसने भी पानी नहीं दिया। उसके मन में आया कि जाकर सीतवा को बोले की पानी दे अपनी दादी को लेकिन नहीं.....।)

बड़ी बहू:- इसके कर्मों के भोग हैं। हूँ......

.... (माँ को बोलती है।)

माँ को बहुत दु:ख लगा, बस सिसक कर रोने लगी....। इस बीमारी ने ऐसे तोड़ दिया कि वह उठने का साहस भी नहीं कर पाती थी।

अब इस परिवार में सब यही सोच रहे थे कि कब ये मरे......।

कुछ ही क्षण में दीपक की छोटी बेटी बीतन दादी को पानी पीलाती है।......

माँ रोजमर्रा की तरह जिंदगी जीते-जीते एक दिन उनके प्राण पखेरू काल के पाश में फंस जाते हैं......।

आखिरकार एक दिन इस दु:खद सांसारिक तामझाम तनावों और बिखराओं से माँ मुक्त हो गई।.....।।

(मंच पर, घर के लोग और कुछ गाँव के लोग घेर लेते हैं और माँ की तरफ देखते हैं। माँ खटिये से नीचे उतारी गई हैं।)

उद्देश्य:- कोई भी कार्य सोच-समझकर और भविष्य के परिणामों को देखते हुए करना चाहिए, ताकि वह बाद में बाध्य न बने..... जैसा कि इस नाटक में हुआ है। आज की वर्तमान पीढ़ी अपने कर्तव्य को भूलकर केवल अधिकार को ही प्राप्त करना चाहती है।, जिसका खामियाजा जीवन भर माँ-बाप को ही भरना पड़ता है।

उसी प्रकार आज केवल एक माँ नहीं बल्कि कई माँए है जो कष्टपूर्ण वृद्धावस्था का जीवन व्यतीत कर रही हैं ......।। (यें मंच पे बोला जा रहा है...।।)

पटाक्षेप

चाँदनी कुमारी

परास्नातक द्वितीय वर्ष

प्रमुख साहित्यकार

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' को हिंदी कविता जगत में प्रयोगवाद का पुरस्कर्ता कहा जाता है। 'अज्ञेय' का जन्म (7 मार्च 1911)कसया, देवरिया, उत्तर प्रदेश में हुआ था। अज्ञेय के बचपन का नाम 'सच्चा' था । 'वत्स' गोत्र के कारण 'वात्स्यायन' हो गये। हीरानंद पिता का नाम था, जबकि 'अज्ञेय' नाम जैनेन्द्र और प्रेमचंद का दिया हुआ था। इसका जिक्र स्वयं अज्ञेय जी ने अपने एक साक्षात्कार में किया था। उस साक्षात्कार के अनुसार, अज्ञेय ने जैनेन्द्र कुमार के पास अपनी रचनाएं प्रकाशन के लिए भेजी। जैनेन्द्र जी ने वह रचनाएं प्रेमचंद जी को दी। रचनाओं पर लेखक का नाम नहीं था। प्रेमचंद ने उनसे रचनाओं के लेखक का नाम पूछा। उस पर जैनेन्द्र जी ने कहा- 'लेखक का नाम तो नहीं बताया जा सकता, वह तो 'अज्ञेय' है। इस पर प्रेमचंद जी ने कहा, " तब मैं ' अज्ञेय 'नाम से ही कहानी छाप दूंगा।" बस, उसी दिन से 'अज्ञेय' नाम में रचनाएं प्रकाशित होने लगीं। अज्ञेय की यायावरी

वृत्ति ने उन्हें बहुत भटकाया। प्रारम्भ में सेना में नौकरी की, किन्तु आजादी का बिगुल बजने पर वे एक क्रान्तिकारी के रूप में उसमें कूद पड़े, गिरफ्तार हुए और जेल भी गये। जेल जीवन का प्रभाव अज्ञेय के लेखन पर खूब पड़ा है। उनकी कहानी 'कोठरी की बात' पढ़कर पता लगता है कि आन्दोलनकारी कैसे मजबूत बनते होंगे। जब अज्ञेय जी जेल में थे, तभी उनका काव्य – संग्रह 'भग्नदूत' और 'इत्यलम्' प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की कविताओं में क्रांति का स्वर प्रधान था।

अज्ञेय एक कवि के रूप में ही नहीं बल्कि एक प्रख्यात कथाकार, समीक्षक, निबन्धकार, पत्रकार, सम्पादक, विचारक - चिन्तक आदि अनेक रूपों में हिन्दी - जगत् में ख्यात हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में 'दिनमान' और 'प्रतीक' का कुशल सम्पादन कर अज्ञेय ने ख्याति अर्जित की तो 'तार सप्तक' के सम्पादन ने उन्हें हिन्दी काव्य में नये युग का प्रवर्तक बना दिया। अज्ञेय जी जातिवाद

के घोर विरोधी थे। यह बात तब की है जब वह लखनऊ में रहा करते थे। उनके पड़ोस में एक अरोड़ा परिवार रहता था। अरोड़ा किसी सरकारी दफ्तर में क्लर्क थे। दोनों लोगों की छतें लगी हुयी थीं। अरोड़ा जी की एक छोटी लड़की थी। अरोड़ा दंपती प्यार व दुलार से उसे मुन्नी कहा करते थे। अरोड़ा रोज शाम को अपनी बिटिया से कहते, 'मुन्नी! तुम कौन हो? मुन्नी कुछ कहती तो अरोड़ा जी कहते, 'कहो, हम अरोड़े होते हैं।' यह बताने में उनके मुंह से कुछ ऐसा भाव निकलता था कि जैसे अरोड़ा होने पर मुन्नी को गर्व करना चाहिए। एक दिन अज्ञेय से बर्दास्त नहीं हुआ। अरोड़ा को डपटते हुए बोले, 'हम ठाकुर हैं, हम ब्राह्मण हैं, बनिया हैं, अरोड़ा हैं, मतलब किस जाति के हैं', यह बताने पर आपका जोड क्यों रहता है? जातिवाद तो हमारी राजनीति का संकट है पर आप जैसे लोग इस संकट को घर में घुसेड़ रहे हैं। अरे! अरोड़ा से कभी इंसान भी बन जाए। मुन्नी को यह क्यों नहीं सिखाते, 'हम मनुष्य हैं; इंसान हैं या भारतीय हैं। अज्ञेय की डपट से अरोडा जी का सिर झुक गया। अगले दिन शाम को जब अज्ञेय अपनी छत पर आए तो उन्हें पड़ोस से आवाज सुनायी पड़ रही थी, 'मुन्नी कोई पूछे तो बताना हम अरोड़ा नहीं भारतीय हैं।' अज्ञेय जी का ये उपदेश आज के समाज के लिए भी एक सीख सिद्ध होता है। कथा जगत में भी 'अज्ञेय' जी अपने उपन्यास और कहानियों के द्वारा अमर हो गये। यात्रा - वृत्तान्त के क्षेत्र में तो राहुल सांकृत्यायन के बाद उन्हीं का नाम आता है। यद्यपि उन्होंने राहुल की भाँति बहुत अधिक यात्राएँ नहीं कीं, किन्तु यात्रा-वृत्तांत पर जो कुछ भी लिखा वह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

प्रमुख रचनाएं -भग्नदूत, चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार। शेखर: एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी, विपथगा, शरणार्थी, कोठरी की बात आदि।'

पुरस्कार -'आँगन के पार द्वार' कृति पर अज्ञेय को 1964 ई में 'साहित्य अकादमी' तथा 'कितनी नावों में कितनी बार' काव्य - संग्रह पर 1979 ई में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आकांक्षा मिश्रा
परास्नातक द्वितीय वर्ष

हरिवंश राय बच्चन

वर्ष 1935 में हिन्दी कविता के आकाश पर चमकते सितारे की तरह छा जाने वाले बच्चन को हिन्दी का उमर खय्याम और जनकवि कहा गया है ।

वर्ष 1955 में वे विदेश मंत्रालय में विशेष अधिकारी (हिन्दी) के तौर पर नियुक्त हुए और 10 साल तक इस पद पर कार्य किया। इसके पश्चात् 1966 में हिन्दी साहित्य जगत में अपने- अविस्मरणीय योगदान के लिए उन्हें राज्यसभा में मनोनित किया गया।

विकल विश्व, खादी के फूल, सूत की माला, दो चट्टानें इत्यादि है।

बच्चन जी को पद्म भूषण (1976), के. के. बिरला फाउण्डेशन से उनकी आत्मकथा 'क्या भूलूं क्या याद करूं' पर सरस्वती सम्मान, दो चट्टाने पर साहित्य अकादमी पुरस्कार (1969), सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और हिन्दी साहित्य सम्मेलन, साहित्य वाचस्पति सम्मान से सम्मानित किया गया।

प्रमुख काव्य कृतियां:-निशा-निमंत्रण, मिलन यामिनी, धार के इधर- उधर, मधुशाला।

प्रमुख गद्य रचनाएँ:- क्या भूलूं क्या याद करूं, टूटी-फूटी कडियाँ, नीड़ का निर्माण फिर-फिर।

इसके अतिरिक्त प्रमुख कृतियाँ- मधुबाला, मधुकलश, सतरंगिनी, एकांत संगीत,

बच्चन जी प्रेम व सौन्दर्य के कवि हैं। उनके साहित्य में प्रेम और सौन्दर्य के जीवन के प्रति पूर्ण आस्था अभिव्यक्त है। इनकी रचनाओं में मानवतावादी भावना मुखरित हुई है। इनकी कविताओं में सबसे प्रमुख प्रवृत्ति प्रणय और निराशा ही नहीं बल्कि आशा और सृजन का स्वर भी मुखरित हुआ है।

अगर हरिवंश राय बच्चन की काव्य यात्रा पर प्रकाश डालें तो उनकी सबसे महत्वपूर्ण कृति है- 'मधुशाला'। वर्ष 1935 में प्रकाशित मधुशाला ने बच्चन जी की लोकप्रियता में चार चाँद लगा दिए। उन्होंने एक ऐसे विषय पर कविता लिखने का साहस किया जिस पर आम आदमी बातें करने से भी कतराता है। सियासी गहमागहमी के इस दौर में मधुशाला की ये काव्य पक्तियाँ बेहद प्रसिद्ध है-

"मुसलमान औ' हिन्दू हैं दो, एक, मगर, उनका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय, एक मगर उनकी हाला,
दोनों रहते एक न जब तक मस्जिद मन्दिर में जाते,
बैर बढ़ाते मस्जिद मन्दिर मेल कराती मधुशाला।"

बच्चन जी को उर्दू की गज़लें लुभाती थी। दरअसल इन गज़लो में चमक और लचक थी जो सीधे पाठक के हृदय को स्पर्श करती थी।

हरिवंश राय बच्चन के निजी जीवन में घटी घटनाओं ने ही समआनंद भाव को उनके व्यक्तित्व का प्रमुख आयाम बनाया है। वर्ष 1936 में उनकी पत्नी श्यामा देवी का निधन हो जाता है जो घटना बच्चन जी को अंदर तक हिला कर रख देती है। वर्ष 1939 में 'एकांत संगीत' नाम से उनका काव्य संग्रह प्रकाशित होता है। हरिवंश राय बच्चन के भीतर की पीड़ा को उनकी इन पक्तियों के माध्यम से समझा भी जा सकता है -

“संघर्ष में टूटा हुआ,
दुर्भाग्य से लूटा हुआ
परिवार से छूटा हुआ,
कितना अकेला आज मैं! कितना अकेला आज मैं!”

इस काव्य संग्रह के प्रकाशित होने के दो वर्ष बाद यानी साल 1941 में हरिवंशराय बच्चन, तेजी सूरी से विवाह करते हैं। इनको अपने जीवन के संघर्ष का एक साथी मिल जाता है, जिससे संघर्ष भी सहज प्रतीत होने लगते हैं। इसी सहजता के साथ वो इन पक्तियों की रचना करते हैं:-

"नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर!
नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर - फिर!"

उत्तर - छायावादी युग के आखिरी स्तम्भ और हालावाद के प्रवर्तक कवि हरिवंशराय बच्चन ने जुहू स्थित अपने निवास प्रतीक्षा

में 18 जनवरी, 2003 को आखिरी सांस ली।

बच्चन जी हिन्दी साहित्य में अपने अविस्मरणीय योगदान के लिए हमेशा स्मरणीय रहेंगे।

हरिवंशराय बच्चन का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है उनकी पत्नी के मृत्यु के पश्चात उनका जीवन अत्यन्त निराशा से

भर गया । किन्तु उससे भी वो अत्यन्त सहजता से निकलते हैं।

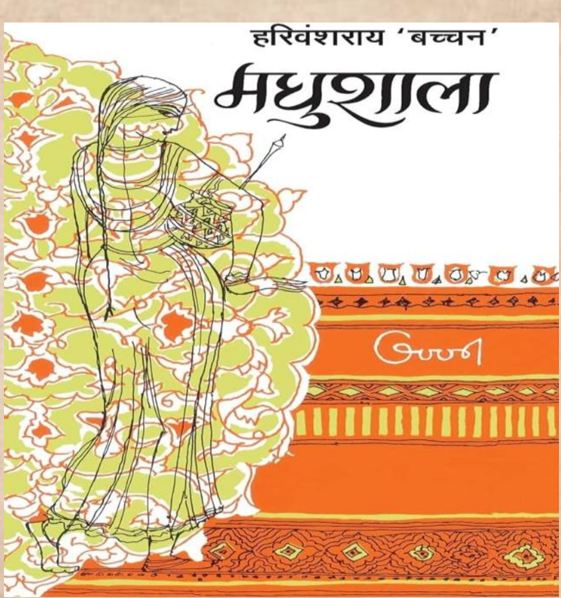

मेरी प्रिय कविता मधुशाला, जो बच्चन की प्रमुख कृतियों में एक है। उनमें बच्चन ने हिन्दू-मुसलमान को अलग-अलग धर्मों के पक्षकार मानते हुए यह बताया कि भले ही वह अपने-अपने धर्म को मानते है किन्तु मदिरालय में सब एक हो जाते है। न किसी का प्याला अलग होता है न धर्म ।

इस प्रकार बच्चन कबीर के भाँति ही जाति को महत्व नहीं देते, वो मानते है इसमें भेद करने वाले हम ही हैं।

प्राची सिंह
परास्नातक द्वितीय वर्ष

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक है। उन्होंने हिंदी कविता को एक नयी विचारधारा प्रदान की। उनका जन्म 1899 ईस्वी में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता पं० रामसहाय त्रिपाठी उन्नाव जिले में गढ़ाकोला गाँव के निवासी थे।

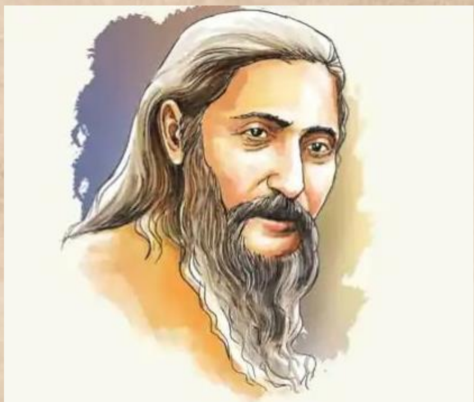

निराला भाव से स्वतंत्र कवि थे। इनका सम्पूर्ण जीवन संघर्षों में बीता। उनके जन्म के तीन वर्ष बाद उनकी माता का देहांत हो गया, माँ को खोने के बाद पिता की रहगुजर में जीवन गुजारने की वजह से 'निराला' एक साहसी कवि बन गये थे। अभाव के बीच 'निराला' ने हाई स्कूल की पढ़ाई करने के बाद घर में अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन किया। इनपर रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद और रवीन्द्रनाथ टैगोर का भी गहरा प्रभाव पड़ा। 1911ईस्वी में इनका विवाह मनोहरा देवी से हुआ परन्तु एक पुत्री को जन्म देकर वो अल्पायु में ही स्वर्ग सिधार गई। 1935 ईस्वी में उनकी पुत्री सरोज का भी निधन हो गया।

निराला जी की काव्य प्रतिभा किसी प्रशंसा की मोहताज नहीं है। छायावाद में इनकी सबसे बड़ी देन 'मुक्त छन्द' का प्रवर्तन है । इनकी ओजस्वी लेखनी ने कविता के सच को साहसिक अयाम दिया है। निराला जब पूँजीवाद को कोसते हुए गरीब और सर्वहारा वर्ग की बात करते हैं तब मैं उनके काफ़ी करीब हो जाती हूँ। उनकी लेखनी में आम आदमी का दर्द समाया हुआ है। निराला गम का रोना नहीं रोते बल्कि वह उसे एक उपहार मानते हुए जीवन में सबल देने वाला एक प्रेरणादायी कारक मानते हैं।

इलाहाबाद में "पत्थर तोड़ती हुई महिला पर कलम चलाई है" वह हिन्दी साहित्य की एक शाश्वत कविता की संज्ञा पा चुकी है। सर्वहारा वर्ग से इनकी सहानुभूति गहरी है। वह

गरीबी देखकर भाव विह्वल हो उठते थे। उन्होंने भूख से पीड़ित व्यक्ति का चित्रण अपनी कविता के माध्यम से किया है।। जो इस प्रकार है -

"पेट- पीठ दोनों मिलकर हैं एक

चल रहा लकुटिया टेक

मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को”

'सरोज स्मृति' इनकी एक महत्वपूर्ण एवं लम्बी कविता है । जिसमें उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति में एक सरोज की ही नहीं अपितु हजारों लाखों सरोज की कहानी कहीं है। जिसमें वे अभाववश उनकी चिकित्सा का थोड़ा सा भी प्रबंध नहीं करा पाते अपने जीवन की असहाय एवं निरर्थकता पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं -

इनकी प्रमुख रचनाएं - अनामिका 1923, परिमल -1929 , गीतिका - 1936, कुकुरमुत्ता, अणिमा ,नये पत्ते, गीत-गुंज , सरोज स्मृति, राम की शक्ति पूजा आदि है। इनकी भाषा संस्कृत निष्ठ एवं खडी बोली हिन्दी है। निराला को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त है। अतः निराला का जीवन संघर्षों की एक जीती - जागती मिसाल है। उनके जीवन

"धन्य मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे हित न कर सका।"

'राम की शक्ति पूजा' कविता निराला के ओज का साक्षात प्रमाण है। इस कविता के पाठ से निराशा में मुरझाए लोगों के जीवन में आशा का संचार होता है। इसमें उन्होंने राम के चरित्र की व्याख्या करते हुए उन्हें एक आदर्श राजा के रूप में स्थापित किया है। इसमें उनकी कुछ पक्तियाँ प्रस्तुत है। उन्होंने लिखा है-

"होगी जय, होगी जय

हे पुरुषोत्रम नवीन

कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।"

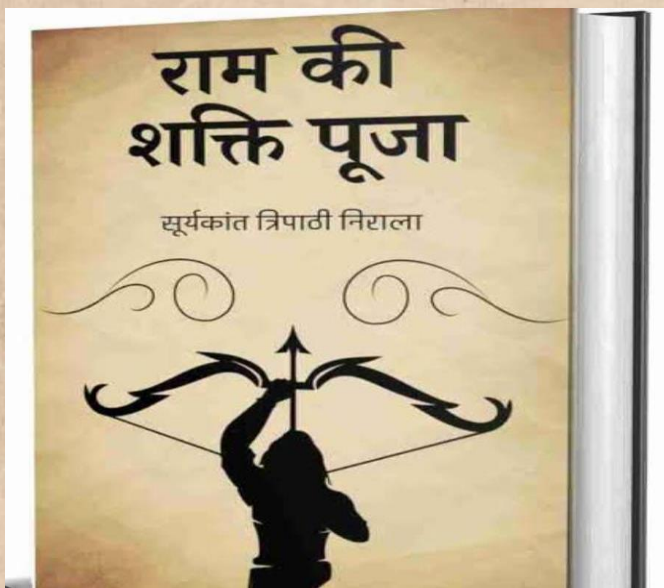

में विपत्तियाँ हमेशा उन्हें परेशान करती रहीं। कभी असमय मृत्यु कभी - आर्थिक विषमताएँ और पैसों का अभाव। इसके बाद भी इन्होंने अपनी कविताओं में ओज और उमंग कम नहीं होने दिया, सायद इसी वजह से मैं इस महाकाव्य को पसंद करती हूँ। इलाहाबाद में 1961 को इनका निधन हुआ।

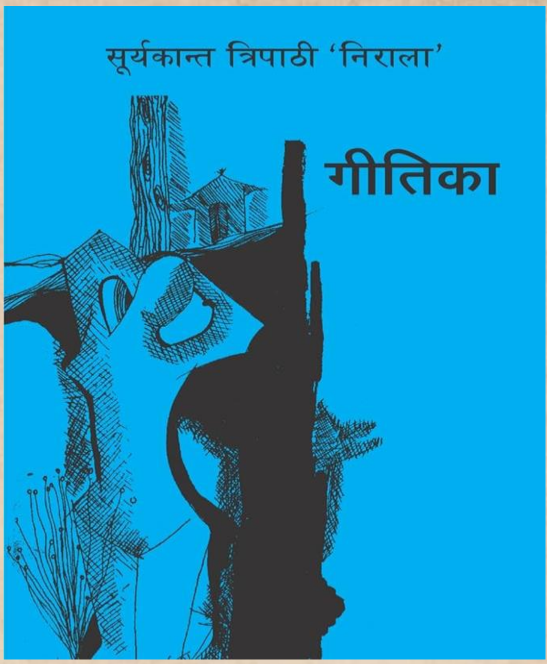

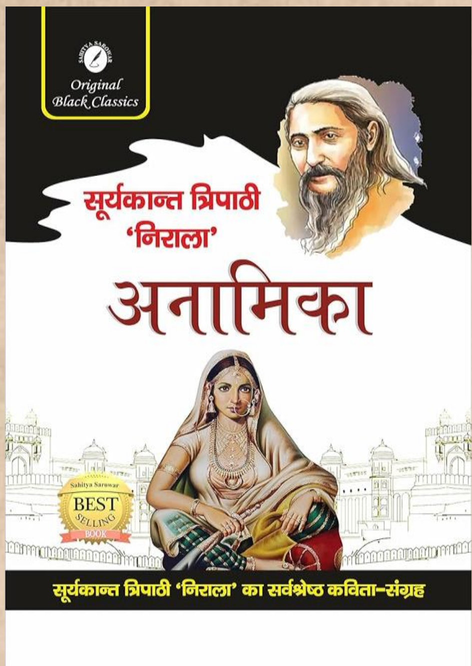

नेहा पाण्डेय
परास्नातक द्वितीय वर्ष

धूमिल

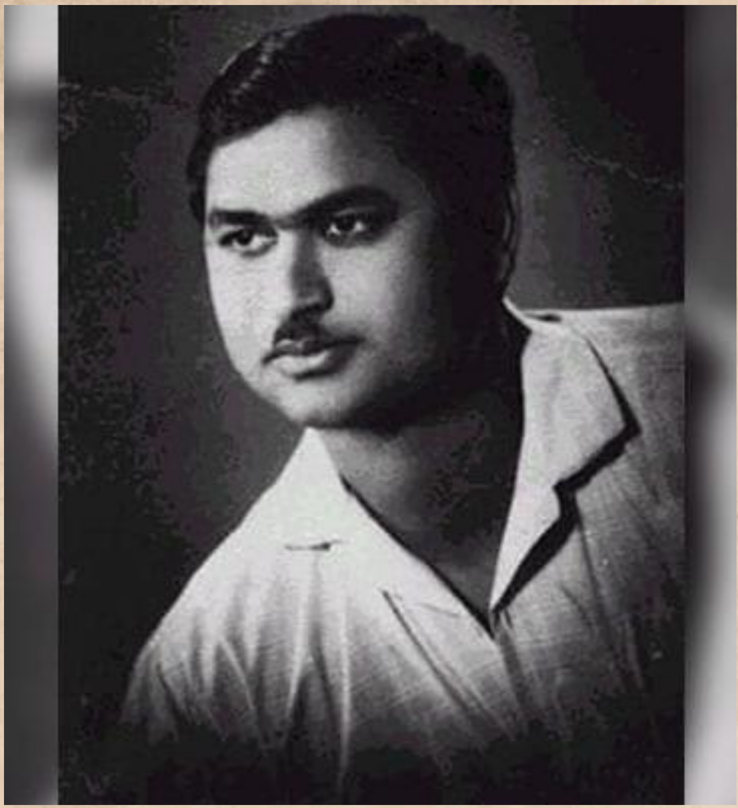

_धूमिल जिनका वास्तविक नाम सुदामा पाण्डेय धूमिल था। वे हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख कवि और लेखक थे। उनका जन्म 9 नवम्बर 1936 को वाराणसी के खेवली गाँव में हुआ था। धूमिल की कविताएँ सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर आधारित होती थीं, जिनमें उनके समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों की तीव्र आलोचना होती थी।

धूमिल का प्रारंभिक जीवन साधारण परिस्थितियों में बीता। धूमिल उनका उपनाम था , जिसका अर्थ "धुंधला" या "अस्पष्ट" होता है, शायद यह उनके दुनिया के जटिल दृष्टिकोण को दर्शाता है।

धूमिल की कविताएं अपनी तीव्र ऊर्जा और बेबाकीपन के लिए जानी जाती हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक अन्याय,राजीतिक भ्रष्टाचार और आदमी की परेशानियों जैसे विषय प्रमुखता से देखे जाते हैं। धूमिल की रचनाओं को हम एक कविता के माध्यम से देख सकते हैं -

संसद से सड़क तक का सफर ,

प्रश्नचिन्ह बन गया हर घर।

मोचीराम की कहानी कहती,

कितने सवाल खड़े करती।

पटकथा लिखते हुए सोचा,

कल सुनना मुझे, ऐसा बोला।

पृथ्वी का सम्मान है जीवन,

मैंने देखा है इसे हर क्षण।

एक नागरिक की धर्मशाला,

हर आदमी था मिट्टी का मादक।

दुखी मन से जीवन जिया,

राजनीतिक दृश्य को समझा।

काठ की हांडी में जलता ,

संसद की कुर्सियों की गाथा ।

अकाल दर्शन में डूबा मन ,

सपने में टूटी हर कड़ी बन ।

लोकतंत्र के काले अध्याय ,

शोषण की दास्तान सुनाई ।

धूमिल की कविताओं का मर्म ,

जीवन का है यही धर्म ।

धूमिल ने अधिक नही लिखा , पर जो लिखा , औरों से बिल्कुल अलग लिखा । उनके जीवन-काल में एक मात्र प्रकाशित होने वाला काव्य-संग्रह ' संसद से सड़क तक '(1972 ईस्वी) है । उनकी मृत्युपरांत उनकी कविताओं का दूसरा संकलन ' कल सुनना मुझे ' (1972 ईस्वी) और तीसरा संग्रह ' सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र ' प्रकाशित हुआ।कविता के

इन तीन संग्रहों ने ही धूमिल को हिंदी कविता का एक अमर कवि बना दिया। ' संसद से सड़क तक ' , 'पटकथा' , 'मोचीराम ' , 'अकाल- दर्शन', 'शहर का व्याकरण', 'भाषा की रात' , 'किस्सा जनतंत्र' , 'मोचीराम ' , तथा 'कल सुनना मुझे' आदि उनकी ऐसी ही प्रसिद्ध कविताएं है । 'कल सुनना मुझे' मरणोपरांत उनका साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित काव्य-संग्रह है।

'पटकथा' उनकी एक ऐसी ही प्रसिद्ध कविता है , जिसमें आजादी के बाद के जनतंत्र और राजनीति दुर्व्यवस्था का यथार्थ प्रस्तुत किया है।

उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति " संसद से सड़क तक " है ,जो 1972 में उनके निधन के बाद प्रकाशित हुई थी। यह कविता राजनीतिक व्यवस्था के प्रति उनकी नाराजगी और समाज के हाशिए पर पड़े लोगों के प्रति उनकी चिंता को व्यक्त करता है।

धूमिल को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कार मिले , जो उनकी रचनात्मक प्रतिभा और समाज पर उनके प्रभाव को मान्यता देते हैं।1979 में धूमिल को मरणोपरांत उनके कविता संग्रह " संसद से सड़क तक " के लिए " साहित्य अकादमी पुरस्कार " से सम्मानित किया गया। धूमिल को " आधुनिक भारतीय साहित्य " में उनके योगदान के लिए भी सम्मानित किया गया। उनकी कविताएं हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखी जाती है, जो सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती है ।

धूमिल का कार्य हिंदी साहित्य पर एक स्थाई प्रभाव छोड़ा है। उन्हें अक्सर पाब्लो नेरूपा और बर्टोल्ट ब्रेख्त जैसे कवियों से तुलना की जाती है , क्योंकि वे कविता को राजनीतिक सक्रियता के साथ जोड़ने में माहिर थे।1975 में 38 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया , लेकिन उनकी कविताएँ आज भी प्रासंगिक है और समाज में व्याप्त अन्याय की आलोचना करती हैं।

संक्षेप में, धूमिल एक साहसी कवि थे जिन्होंने कविताओं के माध्यम से समाज की वास्तविकताओं को चुनौती दी और हाशिये पर पड़े लोगों की आवाज बने। उनकी कविताएँ आज भी लोगों को सोचने और समाज में परिवर्तन की आवश्यकता की याद दिलाती है।

अनुपमा त्रिपाठी

संस्मरण

पिल्लू

पिल्लू हमें तब मिला जब वह मात्र दो दिन का था। दिसंबर की सर्दी में अपनी मां से बिछुड़ा हुआ असहाय ठंड से ठिठुर रहा था। मैं और मेरे सभी भाई-बहन विद्यालय से अपनी अर्द्धवार्षिकी परीक्षा देकर घर को लौट रहे थे। अचानक ठंड से कांपते ,उस कुत्ते के बच्चे परमेरे फुफेरे भाई की दृष्टि पड़ी ,वह दौड़ के उसके पास गया ।उसे जाते देख हमारी नजर भी उस बर्फ सदृश गोले पर पड़ी पास जाकर देखा तो वह बहुत ही प्यारा- सा, सफेद कुत्ते का बच्चा था जिसकी आंखें अभी नहीं खुली थी। हम सबने प्रथमतः उसकी मां की तलाश की तो पता चला उसको रात्रि में ही कोई वहां छोड़कर चला गया। हम सबने निर्णय किया हम इसे पालेंगे परंतु मन में यह संशय था कि घर वाले इसे स्वीकारेंगे अथवा नहीं, यही सोचते-सोचते हम उसे घर ले आए। हम सब उसे छुपाकर अपने अहाते में बने कमरे में ले गए और एक टोकरी में गर्म कपड़ों से ढक दिया, परंतु हमें क्या पता था ऐसा करते हुए हमारी मां हमें कब से देख रही थी। मां ने कहा --- तुम्हारे पापा नहीं रहने देंगे इसे,ये अभी बहुत छोटा है बिना मां के मर जाएगा, हम सब में उदिग्नता थी कि पिताजी शाम को क्या करेंगे.... अंततः जब पिताजी शाम को आए तो सारा वृतांत सुन बोले दूध कैसे पियेगा ,तुम सब स्कूल जाओगे तो कौन देखेगा...... अभी बहुत छोटा है मर जाएगा! परंतु हम सब भाई-बहन की निराश और उद्विग्न आंखों को देख मां ने बात संभाल ली ;बोली मैं दिन भर ध्यान रख

दूंगी, गाय का दूध बोतल से पिला दूंगी ;रहने दीजिए ना प्यारा- सा तो है बाहर जाएगा तो भी मर जाएगा। पिताजी भी मान गए। अब मां दिन भर उसका ख्याल रखती और हम सब स्कूल से आते ही अपने पिल्लू के पास दौड़कर भागते ।

धीरे-धीरे वह बड़ा होता गया और दादा-दादी, मम्मी-पापा, चाचा-चाची सबका चहेता होता गया ।रात को हम सब जब छत पर सोते तो वह भी आकर कभी हम भाई-बहनों के बीच सो जाता तो कभी दादी से चिपककर सो जाता ;और जब कभी दादी का हाथ उस पर सोते समय पड़ जाता तो उसे वह हल्के हाथों से पिटती ,भगाती तो वह और फैलकर सो जाता। यूं ही हंसते-खेलते पिल्लू 4 वर्ष का हो गया ।वह पूरे परिवार का प्रिय तथा सबकी आदत बन चुका था।

गर्मियों की छुट्टियां आयी,हम सब भाई-बहन कहीं न कहीं घूमने चले गए। मैं उस समय नानी के घर पर थी तो एक रात फोन से खबर मिली कि हमारा पिल्लू नहीं रहा, छत से नीचे गिर जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी ……..मैं अचंभित, स्तंभित थी परंतु एक कुत्ता ही तो मरा था अपनी मन की पीड़ा मैं अपनी नानी ,मामा- मामी को नहीं दिखाना चाहती थी। मैं वहां से उठकर छत पर चली गई। रात्रि के अंधकार ने मेरी आंखों को सहारा दिया और आंसुओं को आश्वासन दिया कि तुम्हारा यहां कोई मजाक नहीं बनायेगा। मैं बहुत रोयी, उस रात मुझे नींद नहीं आई ,वह बर्फ का गोला जिसे हम हाथों में उठा कर लाये थे ,अब वह कहीं हमसे बहुत दूर जा चुका था ,परंतु उसके स्नेह- पाश आज भी हमें उससे जोड़े हुए हैं ।आज भी जब घर में उसकी बात होती है तो एक अनोखी मुस्कान सबके चेहरे पर खेल जाती है ।हम सब भाई-बहन तुम्हारे प्रेम के लिए आजीवन तुम्हारे ऋणी रहेंगे पिल्लू।

संस्कृति कुशवाहा

परास्नातक द्वितीय वर्ष

बुचानी

दुबला पतला और सामान्य लंबाई का शरीर, रंग गोरा, चेहरे पर सफेद लंबी दाढ़ी ,भगवा वस्त्र पहने जब भी वह घर से बाहर निकलते तब किसी साधु महात्मा की तरह प्रतीत होते। उनका स्वभाव सरल तथा हंसमुख था। हम तीन भाई-बहनों में उनकी जान बसती थी| बचपन में जब हमारे घर की बिजली चली जाती तो हम भाई-बहन उठकर उनके पास चले जाते और वह जब तक बिजली न आती हमें हाथ पंखे से हवा करते। जब मैं 7 वर्ष की थी तब मैं अपने घर गई जो बाबा ने अपने सेवानिवृत होने के बाद मिलने वाले पैसों से बनवाया था। तब वहां हमारे साथ रहने के लिए मेरे बड़े पापा तथा बड़ी मम्मी भी थी। बाबा मुझे बचपन से ही "बुचानी" कहकर बुलाते थे। जब मैंने आठवीं कक्षा उत्तीर्ण की तब मेरा दाखिला हमारे शहर के सबसे उत्कृष्ट कन्या विद्यालय में कराया गया। जब मैंने नौवीं कक्षा में पढ़ना शुरू किया तब से ही अक्सर मैं अपने कार्यों के लिए स्वयं बाजार तथा मित्रों के घर जाने लगी। जब भी मैं बाहर से घर आती तो अक्सर मेरे बाबा घर के बरामदे में बैठे हुए मिलते। जब भी मुझे घर आने में देर होता और मेरा भैया फोन करके मुझसे पूछता कि मैं कहां हूं ? तो सबसे पहले मेरा यही प्रश्न होता कि, "क्या बाबा गुस्सा हैं?" एक बार जब ईद के त्योहार पर मेरे मित्र ने मुझे अपने घर बुलाया तो मैंने उससे कहा कि ,"मैं बाबा से पूछ कर बताती हूं।" उनसे पूछने पर उन्होंने मुझे जाने से मना कर दिया। मैं नाराज़ हो गई , इसके बाद मेरी मित्र मुझे ले जाने के लिए मेरे घर आई। मैंने नाराज़गी दिखाते हुए मना कर दिया। तब मेरे बाबा ने मुझे प्यार से मनाते हुए मुझे जाने के लिए कहा। मैं जब भी विद्यालय जाने के लिए घर से निकलती तो मेरे बाबा मुझे बुलाकर पूछते ,"कुछ पैसा मिला आज ?" बाबा को सांस की बीमारी थी जिस कारण अक्सर उनकी तबीयत खराब रहती थी। किंतु सारी बीमारियों से लड़कर वे मुस्कुराते हुए जीते थे। हमारे मोहल्ले के आसपास के लोग तथा सहेलियों के माता-पिता जब भी उनसे मिलते तो बहुत प्रसन्न होते तथा उनकी तारीफ करते ।जब मेरी बारवीं का परीक्षा परिणाम आने को था तब मैं बहुत डरी हुई थी , क्योंकि कुछ कारणों से मैंने 12 की कक्षाएं नहीं ली थी। मुझे यह डर था कि कहीं मैं अनुत्तीर्ण न हो जाऊं और तब मैं बाबा से पूछती थी कि यदि मेरा परिणाम अच्छा नहीं आया तो क्या होगा ? तो वे मुझे समझाते थे तथा अपनी कहानियां सुनाते थे। जब भी मेरे परिवार में से कोई मुझे कुछ बोलता तो वे मेरे लिए उन सबसे लड़ते तथा उन्हें डांटते। जब मैंने स्नातक की पढ़ाई शुरू

की तब मुझे बाबा ने फोन दिलाया ताकि मुझे कोई परेशानी न हो। स्नातक उत्तीर्ण करने के पश्चात जब मैंने विद्यालय में शिक्षक का कार्य प्रारंभ किया तथा बाबा को यह बात बतायी तो उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई।

एक दिन उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई। मुझे लगा पहले की ही भांति इस बार भी वे चिकित्सा से बिल्कुल स्वस्थ हो जाएंगे। लेकिन इस बार उनकी तबीयत बहुत गंभीर हो गई। अगर उनका स्वास्थ्य कुछ पल को ठीक होता तो अगले ही पल पुनः बिगड़ जाता। इस बार उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया उन्हें अपनी आने वाली मृत्यु का आभास हो गया था ...। उनके बिगड़ते हुए स्वास्थ्य को देखकर मुझे उनके पुराने दिन याद आ जाते थे, जब वे किसी से मेरे विवाह के बारे में बात करते थे तो उन लोगों से हमेशा कहते थे, "मुझे अपनी बुचानी के विवाह में उसे एक चार चक्का गाड़ी देनी है।"

इस बात का स्मरण होते ही मुझे रोना आ जाता था और मैं हमेशा सोचती थी," क्या बाबा ऐसा करने के लिए तब तक मेरे साथ रह पाएंगे ,?क्या वे मेरा विवाह देख पाएंगे ?" इन सब के दौरान ही मेरी आगे की पढ़ाई के लिए मेरा चयन काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संबंधित कॉलेज वसंत कन्या महाविद्यालय में हो गया था। अपने बाबा को इस हालत में तथा अपने कार्य को छोड़कर वहां जाने के लिए मेरे मन में बहुत उथल-पुथल थी। मैंने अपने बाबा को इस बारे में बताया और उनसे बोला ,"अगर आप बोलेंगे तभी मैं वहां जाऊंगी, अन्यथा नहीं।" उन्होंने मुझसे कहा ,"अगर तुम जाओगी तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता होगी ।"उनके इन शब्दों को उनकी स्वीकृति समझते हुए मैं अपने कार्यस्थल से छुट्टी लेकर अपने छोटे भाई के साथ काशी चली आयी। जब मैं महाविद्यालय में गयी अपने प्रवेश कार्य हेतु तो मेरे प्रवेश शुल्क को जमा करने में कुछ दिक्कतें आयी। इसलिए मैं पुनः घर आ गयी और अपना प्रवेश शुल्क जमा करने हेतु इंतजार करने लगी। वह दिन भी आ गया जब मेरा प्रवेश शुल्क भर दिया गया, तथा मुझे अपनी कक्षा लेने हेतु काशी वापस जाना था। काशी जाने से पहले जब मेरे बाबा थोड़े अच्छे हुए तो उन्होंने मुझसे कहा ,"बिटिया तुम चिंता न करना जब तक मैं जिंदा हूं ,तुम्हें कोई कष्ट या कमी नहीं होगी।" परंतु उनका स्वास्थ्य फिर बिगड़ा।

काशी जाने के एक दिन पूर्व उन्होंने मुझसे पानी पिलाने को कहा। उस समय अक्सर उनके पास गंगाजल रखा रहता था। मैंने उन्हें गंगाजल पिलाया। अगले दिन मै काशी के लिए

निकल गयी। वहां पहुंचकर मैं सबसे पहले अपने कॉलेज गयी ।वहां पहुंचकर मैंने अपनी कक्षा के समय का पता लगाया तथा अपने निवास स्थान पर वापस आ गयी। उस दिन कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि थी ,जिस दिन करवा चौथ का त्यौहार मनाया जाता है। मैं अपने कमरे में बैठी थी ,उसी समय मैंने अपने घर पर फोन किया परंतु किसी ने भी मुझसे अच्छे से बात नहीं कि। उसके कुछ समय पश्चात मुझे पता चला कि मेरे बाबा का साया अब हमारे ऊपर से उठ गया। जब मैं अपने घर गयी तो उस दिन उस बरामदे में मेरे बाबा मुझे बैठे हुए नहीं लेटे हुए मिले। उनके पास पूरा परिवार बैठा हुआ रो रहा था।

उस दिन किसी के पिता, किसी के ससुर, किसी के नाना, किसी के दादा चले गए। लेकिन मैंने अपने दादा के साथ-साथ अपना एक नाम बुचानी भी खो दिया।

आकांक्षा मिश्रा

परास्नातक द्वितीय वर्ष

दादी

शाम के चार बज रहे होते हैं। मैं अपनी दो बहनों के साथ श्री काशी विश्वनाथ के दर्शन कर मन्दिर के प्रांगण में ही स्थित मां अन्नपूर्णा के दर्शन करके मां को चढ़ाए गए कच्चे चावल के प्रसाद को अपने-अपने हथेलियों में लिए अत्यधिक प्रसन्नता के साथ मन्दिर से बाहर निकलती हूं। क्योंकि हमनें ये सुन रखा था कि मां अन्नपूर्णा का यह प्रसाद अत्यधिक कठिनाई से प्राप्त होता है, इसलिए हमारी खुशी व उत्सुकता की कोई सीमा नहीं थी। परन्तु अब समस्या यह है कि हमारे पास मात्र हमारा एक छोटा-सा पैसो वाला बैग है, जिनमें इन चावलों को रखना सम्भव नहीं है क्योंकि न ही हमनें कोई जेब वाले वस्त्र पहन रखे थे और न ही हमारे पास कोई दुपट्टा था। सौभाग्य से मेरी बहन के पास एक रुमाल था। हमनें यह सोच कर कि हम चावल को रुमाल में बांधकर अपनें पर्स में रख लेंगे,जैसे ही चावल को अपनी हथेलियों से उस रुमाल पर रखने के लिए हाथ बढ़ाया अचानक मेरे सामने एक कागज का टुकड़ा नज़र आया, जिसे एक कमजोर हाथों ने पकड़ रखा था। कुछ पल के लिए तो मैं उस शख्स के चेहरे को ही एकटक देखती रह गयी। थका हुआ वृद्ध सा चेहरा होनें के बावजूद चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट थी और जो तेज उसके मुख पर था वह अविस्मरणीय था। वह अलौकिक पर अकेली प्रतीत हो रही थी जैसे कि उन्हें पता हो कि वह अकेली है परन्तु अकेली नहीं है। मेरे अन्तर्द्वन्द की तंद्रा टूटी जब मेरी बहन ने मुझे कुहनी से हल्का-सा धक्का दिया। हम तीनों ने कागज के टुकड़े पर अपने-अपने चावल को रख कर अपने बैग में रख लिया। जब तक मैं उस अलौकिक चेहरे को देखकर उसपर विचार कर रही थी कि वह मेरे बहनों को भी कागज का एक-एक टुकड़ा देकर आगे बढ़ चुका था। मन तो मेरा व्यथित हो गया था कि वह इतनी अलौकिक क्यूं थी? क्योंकि ऐसा नहीं है कि हम पहली बार यहां आए थे। माह में दो से तीन बार हम यहां आ ही जाते हैं पर हमनें

कभी भी इन्हें नहीं देखा था। मन में उठे प्रश्नों को शांत करने के लिए जो कि अचानक से उस अलौकिक छवि को देख कर उठे थे। हमनें कुछ कर्मचारी व पुलिसकर्मियों से बात की तो पता चला कि वह पिछले एक माह से यहीं मन्दिर परिसर में रह रही है। मां अन्नपूर्णा में बने भोग को दो प्रहर ग्रहण करती है और मन्दिर परिसर में ही सो जाती है। इतनी जानकारी प्राप्त होने के बाद मन शांत कहां होता और भी व्यथित हो उठा। हम भी कहां हार मानने वाले थे, हमने निश्चय किया कि अब उन्हीं से बात करेंगे। इधर-उधर खोजनें पर उन्हें मन्दिर के पास ही पाया और देखा कि वह प्रसाद मिलने वाले हर व्यक्ति को उस प्रसाद को रखने के लिए कागज का टुकड़ा दे रहीं थी। किन्तु मेरी तरह उन्हें सब उत्सुकता से क्यूं नहीं देख रहे? उनकी ओर बढ़कर मैंने उनके कंधे पर थपथपाया परन्तु वो नहीं पलटी। मैंने फिर थपथपाया वो फिर नहीं पलटी, मैंने उन्हें आवाज दी "दादी"। मेरी आवाज धीमी और हल्की थी फिर भी वो झट से पलटी और मेरी ओर अपने मुख पर प्रेम, सन्तोष व प्रसन्नता के भाव से देखने लगी। अपने प्रश्नों व व्यथित मन को शांत करके मैंने अपना बैग खोला और बचे हुए सारे खुले रुपए उन्हें दे दिए। उन्होंने रुपए लिए, मुझे मुस्कुरा कर देखा और मेरे सिर पर हाथ फेरकर जाने लगी। वो दादी थी, उनकी पहचान "दादी" थी, उनकी अलौकिकता व तेज उनके नि:स्वार्थ एक सूक्ष्म मदद में थी, उनकी पहचान "दादी"थी।

संजना पाठक

परास्नातक द्वितीय वर्ष

यात्रा संस्मरण

"स्वतंत्रता की पहली उड़ान: मेरी खेल यात्रा"

यह उन दिनों की बात है, जब मेरा पहली बार कबड्डी में चयन हुआ था। मां को काफी मनाने के बाद वह मुझे खेलने के लिए भेजने पर सहमत हुई। इस चयन ने मुझे अत्यंत प्रसन्न किया, क्योंकि यह पहला अवसर था जब मैं अकेले यात्रा करने जा रही थी।

यह घटना 2014 की है| मुझे आज भी स्पष्टतः याद है कि विद्यालय से घर आते ही मैंने मां को बताया कि विद्यालय में कबड्डी टीम के लिए छात्राओं का चयन किया जा रहा है। मैंने उनसे निवेदन किया मैं भी अपना नाम दे दूं? उन्होंने मना कर दिया, लेकिन बहुत आग्रह करने के बाद उन्होंने अनुमति दे दी। अंततः 2 वर्षों की प्रतीक्षा के बाद मेरा राज्य स्तर पर कबड्डी खेलने के लिए चयन हो गया। अत्यंत प्रसन्न थी, जाने के लिए मैंने अपना सामान बांध लिया और जरूरत की चीजों को रख लिया और चल पड़ी अपने सपनों की उड़ान की तरफ। वाराणसी से हमारी ट्रेन शाम 6:00 बजे की थी और हमें फैज़ाबाद जाना था। ट्रेन में बैठते ही मेरी उत्तेजना और बढ़ गई ट्रेन की खिड़की से बाहर देखने पर वाराणसी का दृश्य धीरे-धीरे पीछे छूट रहा था और मैं अपने सपनों की मंजिल की ओर अग्रसर हो रही थी। रात लगभग 11:00 बजे हम अयोध्या पहुंचे वहां से हमने दूसरी गाड़ी पकड़ी और हम फैज़ाबाद आ गए।

हम स्टेडियम पहुंचे और वहां ठहरे, अगले दिन हमारा पहला मैच था। मैच के मैदान में खड़े-खड़े मुझे पिछले दो वर्षों के सारे संघर्षों का स्मरण हो गया, किन-किन कठिन परिस्थितियों का सामना कर मैं आज यहां खड़ी हूं। मैंने निश्चय किया की मैं अपना पूरा प्रयास करूंगी और मैच जीतूंगी।

मैदान पर कदम रखते ही मेरे हृदय की धड़कन तेज हो गई। अंदर एक अलग प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न हुई, पहली बार मैंने कबड्डी के उस रोमांच को महसूस किया, जिसमें सांस

रोक कर रेड करना, विरोधी टीम के खिलाड़ियों को छूकर सुरक्षित वापस आना, और अपनी टीम के लिए अंक जुटाना।

पहले मैच में मेरी टीम और विरोधी टीम के बीच टक्कर हुई। जैसे ही मैंने पहली बार

रेड के लिए कदम बढ़ाया, मेरे मन में हजारों विचार उमड़ आए ---- क्या मैं सफल हो पाऊंगी? वह २ वर्ष पूर्व की सारी बातों का स्मरण हो गया और अचानक मेरे अंदर एक जोश उत्पन्न हुआ। मैंने अपने विरोधियों को ध्यानपूर्वक देखा, उनकी कमजोरी को पहचाना और उन्हें छूकर तेजी से अपने कोर्ट में वापस लौट आई हमारे हर अंक पर हमारी टीम का उत्साह और मेरा आत्मविश्वास बढ़ता गया। हम पहले मैच के विजेता रहे ।

मैच के उपरांत हम अयोध्या घूमने गए। वहां मैंने गोस्वामी तुलसीदास जी की स्मृति में निर्मित तुलसी स्मारक भवन देखा जहां रामायण कला भवन में साल भर चलने वाली प्रदर्शनी और एक पुस्तकालय भी स्थित थी। वहां हमने कई अन्य स्थान भी देखें, फिर हम फैज़ाबाद वापस लौट आए और वहां 10 दिन रहे| मैंने कई नई चीजें सीखी और कई नए लोगों से मिली।

यह यात्रा मेरे जीवन की पहली अकेली यात्रा थी ,जहां मैंने पहली बार स्वतंत्रता का अनुभव किया था। सबके जीवन की एक यात्रा होती है जो हर उस यात्री को कुछ नया सिखाकर या कुछ नया अनुभव करा जाती है। ठीक इसी प्रकार मेरी यात्रा ने मुझे स्वतंत्रता का सही अर्थ सिखाया। वही 'स्वतंत्रता' शब्द जो मैं बचपन से सुनती आई थी लेकिन असल जिंदगी में इसका अर्थ मैंने अपनी खेल यात्रा में अनुभव किया। जहां मैंने देखा कि एक स्त्री का स्वतंत्र होना कैसा होता है।

हर व्यक्ति के जीवन में एक ऐसी यात्रा होती है जो समय के साथ धुंधली नहीं पड़ती। इस प्रकार मेरी यह खेल यात्रा मेरे जीवन में सदैव स्मरणीय रहेगी। ······।

(अनुपमा त्रिपाठी)

परास्नातक द्वितीय वर्ष

निबंध

जलपान गृह

हम या आप किसी विद्यालय, महाविद्यालय ,विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं या कह सकते हैं हमारे जीवन का सफ़र ही यहां से शुरू होता है और यह हमारे मंजिल तक हमें है। जहां हम और आप पहुंचना चाहते हैं। एक छात्र या छात्रा के संपूर्ण विकास में विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय के सभी सुविधाओं का बड़ा योगदान होता है। उन्हीं सभी सुविधाओं में से एक महत्वपूर्ण सुविधा है -'जलपान गृह'। एक स्वस्थ शरीर बनाने में जलपान गृह की भूमिका होती है अगर एक स्वस्थ शरीर ही नहीं हो पहुँचाती तो किसी भी छात्र या छात्रा का शारीरिक और मानसिक विकास होना कठिन लगता है| छात्र या छात्रा के व्यक्तित्व के विकास में भी जलपान गृह की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारे महाविद्यालय में एक जलपान गृह जो अपनी बाहें फैलाए हुए सभी छात्राओं, शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं और महाविद्यालय के सभी सदस्यों का सुबह से लेकर शाम तक स्वागत करती है| यह जलपान गृह हम सभी लोगों के लिए एक तरह से महाविद्यालय द्वारा दिया गया वरदान है। आज के इस दौर में रोज़मर्रा की जिंदगी इतने भाग दौड़ से भरी पड़ी है कि लोग अपने खान-पान पर समय नहीं दे पा रहे हैं| ऐसे में जलपान गृह ही उनका साथी है मुझे जहां तक लगता है जलपान गृह सभी लोगों के लिए मददगार है। एक अच्छी शिक्षा लेने और देने के लिए एक स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क दोनों की आवश्यकता होती है। कभी-कभी हम अपने दिनचर्या में इतने व्यस्त रहते हैं कि खुद भोजन करना भूल जाते हैं या भोजन बना नहीं पाते हैं, तब यह जलपान गृह हमारी मदद करती है। यह महाविद्यालय का एक ऐसा महत्वपूर्ण स्थान है जो लोगों को अलग-अलग भावनाओं से जोड़ती है। जलपान गृह किसी के लिए अच्छे विचारों को सोचने में मदद करती है तो किसी के लिए सामूहिक बातचीत करने में। मुझे जहां तक लगता है कि जलपान गृह हर किसी

के अनुसार उसके सुख और दु:ख में साथ देती है। जलपान गृह में ही बैठकर अच्छे से अच्छे कार्य की योजना बनती है। जलपान गृह में वहां बनी हुई चाय की चुस्की लेते समय वहां की पुरानी यादों को पुन: स्मरण करने का अवसर देती है। वे सभी लोग जो अपने जीवन में जलपान गृह से जुड़े हैं, जैसे हमारे शिक्षक एवं शिक्षिकाएं

, विद्यार्थीयों को जलपान गृह में बैठकर एक -दूसरे से गप्पे लड़ाते हंसी- मजाक करते हुए देखकर उन्हें अपना समय याद आ जाता है कि वे भी छात्र जीवन में ऐसे ही मौज -मस्ती किया करते थे। घर से बाहर रहकर पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के लिए जलपान गृह मां की भूमिका निभाती है| जब कोई विद्यार्थी उदास होते हैं तो जलपान गृह अपने गर्म और स्वादिष्ट भोजन के माध्यम से उनके चेहरे पर मुस्कान बिखेरती है। जलपान गृह किसी भी विद्यार्थी के व्यक्तित्व को बनाने में अहम भूमिका निभाती है। एक नए दोस्त से भी मिलने का कार्य करती है। इस प्रकार जलपान गृह एक स्थान नहीं बल्कि एक जीवंत पात्र है जो हमारे जीवन के हर पहलू को अपने भीतर समेटे हुए हमारी हंसी, हमारे आंसू और हमारे सभी पलों का हिस्सा है और वह हमें हर कदम पर समर्थन और स्नेह प्रदान करती है। जलपान गृह लोगों के जीवन में विभिन्न पहलुओं की साक्षी है।

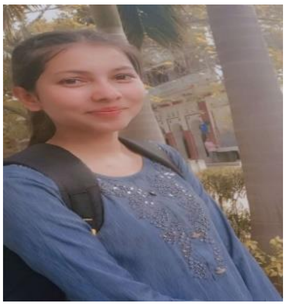

साक्षी पाल

परास्नातक द्वितीय वर्ष

रेखाचित्र

संघर्ष

मेरी उनसे मुलाकात तब हुई जब मैं तीसरी कक्षा में थी। उनका नाम रत्ना था। उनका कद कुछ 4 फीट तथा रंग सांवला, शरीर दुबला-पतला, आंखों के नीचे काले निशान, आँखें बिल्कुल अंदर की ओर धँसी हुई, लम्बी नाक, चेहरे पर एक मीठी-सी मुस्कान.....। उनकी उम्र कुछ 35 वर्ष के आस-पास थी। वह सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। कुछ लोगों को उनकी बातें अच्छी नहीं भी लगती थी क्योंकि वह स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जीने वाली क्रांतिकारी विचारधारा की महिला थी। उनका एक बड़ा पूरा परिवार था जिसमें उनके पति, बेटा, सास- ससुर, नंनद, जेठ- जेठानी, देवर- देवरानी सभी थे परन्तु वह सभी से अलग रहती थी क्योंकि उनके विचार उनके परिवार के लोगों से मेल नहीं खाते थे। रत्ना मैम मेरे अत्यंत करीबी और प्रिय थी मैं उन्हें आज भी अपनी प्रेरणा मानती हूँ। समाज की नजरों से देखा जाए तो उनके पति और पुत्र साथ में थे परंतु जितना मैंने उन्हें जाना और समझा है वह अपने जीवन में नितांत अकेली ही थी। अपने परिवार का भरण-पोषण वह स्वयं करती थी लेकिन फिर भी पति और बेटे की नजर में उनकी कोई कीमत नहीं थी। जिसकी वजह से वह हमेशा दु:खी रहती थी। वह मुझे पढ़ाने आती थी तो हमेशा मुझे अपने ज्ञान से प्रेरित करती थी, कहती थी| *" कभी भी किसी पर निर्भर मत होना अपने जीवन में इतनी सफल होना कि अपने साथ-साथ तुम 10 लोगों का पेट भर सको।"* जब मैंने सातवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली तब उन्होंने मुझसे कहा था कि *"अब तुम्हारा मेरा साथ बस यहीं तक का था अब तुम्हारे लिए किसी और शिक्षक को ढूंढना पड़ेगा.......।"*

जब उन्होंने मुझे पढ़ाना छोड़ दिया था उसके तीन या चार वर्षो बाद रत्ना मैम मेरे घर आई उनको देख मैं बहुत खुश हुई थी| उस समय पैसों की तंगी के वजह से और मेरे परिवार की रूढ़िवादिता सोच की वजह से मेरी पढ़ाई छुड़वा दी गई थी, जब रत्ना मैम को यह बात पता चली कि मुझे अब आगे पढ़ने नहीं दिया जाएगा उस

दिन उन्होंने मुझसे कहा, *"अब समय आ गया है ,तुम्हें स्वयं के लिए आवाज उठानी होगी ,अपने स्वतंत्रता के लिए लड़ना होगा।"* क्योंकि यह बात वह भी जान चुकी थी कि पैसों की तंगी तो बस एक बहाना है समाज में अपनी रूढिवादी सोच को छुपाने की...। उन्हीं के प्रेरणा से आज मैं आज यहां तक आ पायी हूं।

उन्होंने अपने जीवन में बहुत कष्ट सहे थे अपने मायके में भी उन्होंने गरीबी की वजह से बहुत संघर्ष किया और ससुराल के हालात के विषय को तो शब्दों में व्यक्त किया ही नहीं जा सकता। सन् 2010 में उनके साथ ऐसी घटना हुई कि इस घटना ने मेरे पूरे रोम-रोम को हिला दिया था। उनके बेटे ने अपने ही घर में फांसी लगा ली थी। इसकी वजह क्या रही थी इसका पता तो स्वयं रत्ना मैम को भी नहीं हुआ। जवान बेटे का मां के रहते हुए ऐसे चले जाना.. मां के हृदय को छलनी कर देता है। उस समय उनके मन: स्थिति का अंदाजा लगा पाना संभव नहीं था। 15 जुलाई 2011 का दिन मुझे आज भी याद है जब वो मेरे घर आई और उन्होंने अपने हृदय का सारा दु:ख मुझसे प्रकट किया था। उन्होंने मुझसे कहा था, *"बाबू अब मेरे साथ मेरा कोई अपना नहीं, तुम अपने घर में एक छोटा-सा कोना मुझे दे दो मैं वहीं पड़ी रहुंगी।"* मेरे घर पर कोई भी उनके इस बात से राजी नहीं हुआ सभी ने उनके इस बात को टाल दिया और वो मेरे घर से चली गयीं, न जाने कहां....? मेरे मन में आज भी यह टीस है कि मैं उन्हें जाने से रोक न सकी। हालांकि यह मेरे लिए संभव भी नहीं था कि मैं स्वयं उन्हें अपने घर पर रखने का निर्णय ले सकूं। मेरी नजरे आज भी उन्हें खोजती रहतीं हैं कि मेरी रत्ना मैम मुझे एक बार नजर आ जाये और जो मैं उस समय उनके लिए कर नहीं पायी थी वह आज कर सकूं। मैं सोचती हूं कि उन्होंने मुझसे जीवन में पहली बार कुछ कहा और मैं वह भी न कर सकी। यद्यपि वह बहुत स्वाभिमानी स्त्री थी उन्होंने कभी किसी से सहायता नहीं मांगी उनके लिए उनका आत्मसम्मान अत्यंत महत्वपूर्ण था।

पूजा यादव (परास्नातक द्वितीय वर्ष)

साक्षात्कार

डॉ आशा यादव

(विभागाध्यक्ष हिंदी संकाय- वसंत कन्या महाविद्यालय)

डॉ आशा यादव -जन्म तिथि 13 अप्रैल 1964

वसंत कन्या महाविद्यालय में 1987 से सेवारत

रचनाएं/पुस्तक - तीन काव्य संग्रह - 1.जीवन बिंदु, 2.कोरोना की पीड़ा, 3.जीवन के रंग

1.कबीर चिंता के विविध आयाम, 2.भारत स्त्री दशा और दिशा 3.प्रसाद, महादेवी संदर्भ और दृष्टि, 5.संसिद्धि, 6.हजारी प्रसाद द्विवेदी की सृष्टि और दृष्टि|

प्रस्तुत है उनसे बातचीत के कुछ अंश-

- **हिंदी विभाग की स्थापना तथा उनके इतिहास के बारे में बताइए?**

- सन 1954 में महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही हिंदी विभाग में पठन- पाठन प्रारंभ हो गया।

•हिंदी भाषा के बारे में आपके क्या विचार है? भारत में हिंदी भाषा के अस्तित्व के बारे में आपका क्या राय है?

-हिंदी हम भारतीयों का प्राण तत्व है, हमारी अस्मिता की पहचान है। हिंदी है तो हम हैं, हिंदी है तो हिंदुस्तान है। हिंदी यहाँ के जन-जन की आत्मा में बसती है। यहाँ की लगभग 70% जनसंख्या हिंदी भाषी है। जिनकी सोचने, समझने, बोलने तथा कल्पना करने की भाषा हिंदी है। कुछ राज्यों के अतिरिक्त हिंदी हिंदुस्तान की मातृभाषा है। तो जहाँ के लोगों की प्राणवत्ता की पहचान हिंदी है, जहाँ हिंदी अपने दैदीप्यमान स्थिति में है वहाँ हिंदी की स्थिति के लिए हमें अधिक चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब तो वैश्विक स्तर पर हिंदी को बोलने समझने वाले लोग पूरी पृथ्वी पर बसे हुए हैं। मॉरीशस, सूरीनाम जैसे अनेक देश है जहाँ हिंदी भाषी लोग ही बहुतायत में है, तो इस प्रकार हिंदी किसी सीमित क्षेत्र, देश में परी सीमित न रह के वैश्विक स्तर पर अपना परचम फहरा रही है; तो

हिंदी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। भारत के 60.6% लोगों की सोचने की भाषा हिंदी है। उनके बोलने लिखने की परगंतता किसी भी भाषा में हो सकती है, किंतु उनके सोचने तथा चिंतन की जो प्रक्रिया है जो बहुत सूक्ष्म अनुभूति के स्तर से शुरू हो करके तब अभिव्यक्ति के स्तर तक जाती है और साहित्य के नाना विधाओं में जो भी उनकी कृतियाँ हैं, उनमें जो उनकी सोचने की प्रक्रिया है, कल्पना की प्रक्रिया है, अनुभव की प्रक्रिया है, वो हिंदी भाषा में ही है। क्योंकि जिस भाषा का हमारे अंतः स्थल से जुड़ाव होता है उसी भाषा में ही हमारी सोच का विस्तार हो पाता है।

•आप इतने समय से महाविद्यालय से जुड़ी हुई हैं, कौन-कौन से परिवर्तन आपने अनुभव किये है?

-जागरूकता, जो समय के साथ-साथ लोगों में आयी है, खास तौर पर हमारे युवा पीढ़ी में, चूंकी आज का समय टी.वी., इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि का है। तो परिवेश जैसा होता है लोगों की बौद्धिक स्थिति भी वैसे ही परिवर्तित होती जाती है। आज के युग के बच्चे तकनीकी और वैज्ञानिक परिवेश में जन्म ले रहे है। जिससे उनका जो बौद्धिक स्तर है, सोचने समझने की प्रक्रिया है, ये सब बहुत ही विकसित रूप में है। यदि उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो वे सभी क्षेत्रों में बहुत ही अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं और कर भी रहे हैं। बस, भय इस बात का है कि उचित मार्गदर्शन के अभाव में वे इस इंटरनेट आदि के अनंत जाल में उलझ के न रह जाए। तो अपने गुरुजनों, वरिष्ठ जनों का मार्गदर्शन लेते हुए अपनी निजता, अपने स्वाभिमान को बनाए रखें और अपने बौद्धिक उन्नति की राह पर चलते रहे और स्वयं को मिली हुई स्वतंत्रता तथा बौद्धिक स्तर दोनों का सामंजस्य करते हुए हमें आगे बढ़ाना है।

तो परिवर्तन में जागरूकता को देखती हूँ। आज की जो पीढ़ी है उसके अंदर चुनौतियों को स्वीकार करने की जो साहस है वह उसको लेकर के जन्म ले रही है। आज का समय आपा-धापी से भरा हुआ है। लोगों का दायरा बहुत ही संकुचित हो गया है। इस दौर में साहित्य लिखने वालों की संख्या तो बहुत अधिक है परंतु पाठक वर्ग बहुत ही कम है। लेखक वर्ग भी एक निश्चित धारा में बहे जा रहे है। उनकी सोच एक परी सिमन में बंधी हुई है। जरूरत है, आज की इस युवा पीढ़ी को उचित मार्गदर्शन की। जिससे वह बहुत आगे जा सकती है।

• महाविद्यालय से आप इतने वर्षों से जुड़ी हैं आप अपने कुछ अनुभव साझा करें?
- मुझे कुछ 37 वर्ष हो गए सेवा देते हुए इस महाविद्यालय में। मैं भाग्यशाली हूँ कि यही महाविद्यालय मेरी अध्ययन की भी भूमि रही है। यह भूमि बहुत ही उर्वर है। यहाँ जो भी आता है, वह कुछ ना कुछ सीख कर ही जाता है। मैं आज कवयित्री हूँ , लेखिका हूँ , जो कुछ भी हूँ , वह मैं इसी महाविद्यालय की देन हूँ। इस वसंत कन्या महाविद्यालय के परिवेश की जो आभामंडल है, जहाँ इतिहास में इतने विचारशील, चिंतनशील और आध्यात्मिक रूप से समुन्नत विचारधारा के लोगों ने निवास किया, वक्तव्य रखें, संगोष्ठी की; जिससे उन महापुरुषों के स्मृतियां यहाँ की धारा में है, उनकी खुशबू यहाँ के पवन में है, उनका स्पर्श फूलों में है। हमारी जो भारतीय मनिषा है वह यहाँ के परिवेश में रची-बसी है, उनका अनुरणन यहाँ के कण-कण से है। यहाँ आने वाले, रहने वाले (छात्रावास) बच्चों को वो यहाँ पर एक अलग तरह की चेतना, जागृति तथा स्पंदन अपने अंदर अनुभव करती है। समाज की महत्वपूर्ण कड़ी को संवारने, सहजने का काम इस महाविद्यालय में श्रीमती एनी बेसेंट की प्रेरणा से हो रहा है; क्योंकि एक स्त्री के शिक्षित होने से पूरा समाज शिक्षित होने की राह पर चल देता है। हमें गर्व है कि वसंत कन्या महाविद्यालय की छात्राएं आज देश-विदेश में अपनी कामयाबी का परचम लहरा रही हैं। हम समय के साथ-साथ परिवर्तन को भी साथ लेकर चले हैं: परंपरा और आधुनिकता, "हजारी प्रसाद द्विवेदी जी भी कहते हैं- पीछे छूट गया पैर परंपरा है, आगे बढ़ गया पैर आधुनिकता है।" तो हमारी जो समृद्ध परंपराएं हैं उन परंपराओं को साथ लेते हुए अपनी जड़ों के साथ चलना है । आधुनिकता की दौड़ में अंधे बनकर चलना है अपितु उसकी जो वैज्ञानिकता है उसे सोच समझ कर उसका अंगीकार करना है। यदि हम अपनी दृष्टि को सकारात्मक और विचारों को तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भर ले तो रास्ते कंकड़ीले-पथरीले भले ही हो परंतु हमारे अंदर वो साहस रहेगा जिससे हम उसे राह की बाधा को पार करते हुए, चुनौतियां को सहजता से स्वीकार करते हुए आगे बढ़ेंगे और निश्चित रूप से सफल होंगे।

"उत्तिष्ठत जागृत प्राप्त वरान्निबोधत" विवेकानंद जी भी कहते हैं कि युवा पीढ़ी को हर समय चैतन्य रहना है। अर्जुन की ही भांति हमारा भी उद्देश्य एकदम निश्चित रहना चाहिए।

इस प्रकार धीरे-धीरे इन 37 वर्षों में ये बदलाव हमने देखा है कि किस प्रकार पुराने समय में स्त्री शिक्षा पर कोई बल नहीं, फिर बस इंटरमीडिएट तक पढ़ाई, बस इसलिए कि अच्छे परिवार में शादी हो सके, किंतु वर्तमान समय में छात्राओं में भी जागरूकता

आयी है कि उन्हें आत्मनिर्भर बनना है। अब वो किसी के ऊपर आर्थिक रूप से आश्रित नहीं रहना चाहती। मैं प्रसन्न हूँ कि यह महाविद्यालय उन्हें इस योग बना रहा है।

चूंकी मैं कहना चाहूँगी कि आप केवल एक स्त्री ही नहीं आप एक बेटी, बहू, पत्नी, माँ, बहन भी हैं इन रिश्तों का ताना-बना संभालना भी एक स्त्री का ही दायित्व होता है, और उसके साथ अपने कार्य क्षेत्र की भी समस्त जिम्मेदारियों को भी संभालना आपका कर्तव्य है। एक शिक्षित स्त्री इन दोनों ही जिम्मेदारियों के मध्य बड़ी ही कुशलता से सामंजस्य स्थापित कर लेती है; और चाहे जितनी भी समस्याएं आये, उन समस्याओं में भी वे अपनी निजता की रक्षा करते हुए और जिन-जिन रिश्तों से वे जुड़ी हैं उनकी भी निजता का ध्यान रखते हुए, अपने को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाती हैं।

क्योंकि एक स्त्री समाज की नींव होती है वह कमजोर नहीं होती, अपितु उसके ऊपर परिवार का, समाज का, देश का और समस्त संसार का दायित्व होता है। तो हमें इस प्रकार का चरित्र निर्माण करना है कि कोई प्रश्न चिन्ह न लगा सके, हमारे अंदर जो मूल्य है उसका अवमूल्यन न हो सके। तो अपने विचार उच्च रखिए, अच्छे इंसान बनिए।

•आपका एक संदेश युवा वर्ग की स्त्रियों के लिए?

स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष की छात्रा प्रिया तथा रिशिता के द्वारा प्रो॰ आशा यादव मैम का साक्षात्कार।

-अपना स्त्री होना सार्थक करो। क्योंकि ईश्वर ने एक नारी को अनेक अमूल्य गुणों से नवाज कर इस धरा पर भेजा है। उसके पास कोमलता, लज्जा, शील, सौंदर्य, सौम्यता, स्निग्धता, मातृत्व, वात्सल्यता, प्रेम, पोषण-कला के साथ-साथ शक्ति, प्रचंड, धैर्यता, गंभीरता, विद्वता भी है। हमारा सौभाग्य है कि हम स्त्री हैं। अपने गुणों से समाज को अभीसिंचित करो। इस समाज का पोषण करो।

~बहुत धन्यवाद मैम

यूजीसी नेट सिलेबस

पेपर 1

1.शिक्षण योग्यता

शिक्षण: अवधारणा, उद्देश्य, शिक्षण के स्तर, विशेषताएँ और बुनियादी आवश्यकताएँ।

शिक्षार्थियों की विशेषताएँ: किशोर और वयस्क शिक्षार्थियों की विशेषताएँ, व्यक्तिगत अंतर।
शिक्षक, शिक्षार्थी, सहायक सामग्री, शिक्षण सुविधाएं, सीखने के माहौल और संस्थान से संबंधित शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक।
उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण के तरीके: शिक्षक केंद्रित बनाम। शिक्षार्थी केंद्रित तरीके; ऑफ लाइन बनाम। ऑन-लाइन तरीके।
शिक्षण सहायता प्रणाली: पारंपरिक, आधुनिक और आईसीटी आधारित
मूल्यांकन प्रणाली: मूल्यांकन के तत्व और प्रकार, उच्च शिक्षा में विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली में मूल्यांकन, कंप्यूटर आधारित परीक्षण, मूल्यांकन प्रणाली में नवाचार।

2. अनुसंधान योग्यता

अनुसंधान: अर्थ, प्रकार, और विशेषताएँ, प्रत्यक्षवाद, और अनुसंधान के बाद प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण
अनुसंधान के चरण
अनुसंधान में आईसीटी का अनुप्रयोग
अनुसंधान के तरीके: प्रायोगिक, वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, गुणात्मक और मात्रात्मक तरीके
थीसिस एंड आर्टिकल राइटिंग: फॉर्मेट एंड स्टाइल्स ऑफ रेफरेंसिंग अनुसंधान नैतिकता

3. कॉम्प्रिहेंशन

एक पैसेज दिया जाएगा, पूछे गए प्रश्न का उत्तर उसी पैसेज से दिया जाना है

4.संचार

प्रभावी संचार: मौखिक और गैर-मौखिक, अंतर-सांस्कृतिक और समूह संचार, कक्षा संचार
मास-मीडिया और समाज
संचार: संचार का अर्थ, प्रकार और विशेषताएँ
प्रभावी संचार की बाधाएं

5.गणितीय तर्क और योग्यता

संख्या श्रृंखला, पत्र श्रृंखला, कोड और संबंध
गणितीय योग्यता
तर्क के प्रकार

6. तार्किक विचार

वेन आरेख: तर्कों की वैधता स्थापित करने के लिए सरल और एकाधिक उपयोग
तर्कों की संरचना को समझना: तर्क के रूप, स्पष्ट प्रस्तावों की संरचना, मनोदशा और चित्र, औपचारिक और अनौपचारिक भ्रम, भाषा का उपयोग, अर्थ और शर्तों के अर्थ, विपक्ष का शास्त्रीय वर्ग
प्रमाण: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमन, शब्द, अर्थपट्टी, और अनुपालब्धि
डिडक्टिव और इंडक्टिव रीजनिंग का मूल्यांकन और भेद।
अनुमान, व्याप्ति, हेत्वभास की संरचना और प्रकार
उपमा
भारतीय तर्क: ज्ञान के साधन

7.डेटा व्याख्या

डेटा का चित्रमय प्रतिनिधित्व और मानचित्रण
डेटा के स्रोत, अधिग्रहण और वर्गीकरण
डेटा और शासन
मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा
डेटा व्याख्या

8.सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी)

इंटरनेट, इंट्रानेट, ई-मेल, ऑडियो और वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग की मूल बातें
आईसीटी और शासन
उच्च शिक्षा में डिजिटल पहल
आईसीटी: सामान्य संकेताक्षर और शब्दावली

9.लोग, विकास और पर्यावरण

मानव और पर्यावरण सहभागिता: मानवजनित गतिविधियाँ और पर्यावरण पर उनका प्रभाव
मानव स्वास्थ्य पर प्रदूषकों के प्रभाव
विकास और पर्यावरण: सहस्राब्दी विकास और सतत विकास लक्ष्य
प्राकृतिक खतरे और आपदाएँ: शमन रणनीतियाँ

पर्यावरणीय मुद्दे: स्थानीय, क्षेत्रीय और वैश्विक; वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, अपशिष्ट, जलवायु परिवर्तन और इसके सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक आयाम
प्राकृतिक और ऊर्जा संसाधन: सौर, पवन, मिट्टी, हाइड्रो, भूतापीय, बायोमास, परमाणु और वन।
पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986), जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना, अंतर्राष्ट्रीय समझौते/प्रयास-मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल, रियो शिखर सम्मेलन, जैव विविधता पर सम्मेलन, क्योटो प्रोटोकॉल, पेरिस समझौता, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन

10. उच्च शिक्षा प्रणाली

स्वतंत्रता के बाद के भारत में उच्च शिक्षा और अनुसंधान का विकास
व्यावसायिक, तकनीकी और कौशल आधारित शिक्षा
प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा और शिक्षा के संस्थान
नीतियां, शासन और प्रशासन
भारत में ओरिएंटल, पारंपरिक और गैर-पारंपरिक शिक्षण कार्यक्रम
मूल्य शिक्षा और पर्यावरण शिक्षा

पेपर 2

1: हिन्दी भाषा और उसका विकास

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

हिन्दी के विविध रूप

हिन्दी का भाषिक स्वरूप

हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूप

देवानागरी लिपि

2: हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्येतिहास दर्शन

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धतियां

हिन्दी साहित्य का कालविभाजन और नामकरण

भक्तिकाल

रीतिकाल

आधुनिक काल

3: हिन्दी साहित्य की गद्य विधाएं

हिन्दी की अन्य गद्य विधाएं

हिन्दी उपन्यास

हिन्दी कहानी

हिन्दी नाटक

हिन्दी निबंध

हिन्दी का प्रवासी साहित्य

4: साहित्यशास्त्र

काव्य के लक्षण, काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन

प्रमुख संप्रदाय और सिद्धान्त

रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य

रस निष्पत्ति, साधारणीकरण

शब्दशक्ति, काव्यगुण, काव्य दोष

प्लेटो के काव्य सिद्धान्त

अरस्तू: अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन, विरेचन सिद्धान्त

वर्ड्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त

कॉलरिज: कल्पना और फैंटेसी

टी. एस. इलिएट: निर्वैयक्तिकता

का सिद्धान्त, परम्परा की अवधारणा

आई.ए. रिचर्ड्स: मूल्य सिद्धान्त, संप्रेषण सिद्धान्त तथा काव्य-भाषा सिद्धान्त

रूसी रुपवाद

नयी समीक्षा

मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब

5: वैचारिक पृष्ठभूमि

भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आन्दोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि

हिन्दी नवजागरण

खड़ीबोली आन्दोलन

फोर्ट विलियम कॉलेज

भारतेन्दु और हिन्दी नवजागरण

महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण

गांधीवादी दर्शन

अम्बेडकर दर्शन

लोहिया दर्शन

मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद, अस्मितामूलक विमर्श (दलित, स्त्री, आदिवासी एवं अल्पसंख्यक)

6: हिन्दी कविता

पृथ्वीराज रासो – रेवा तट

अमीर खुसरो – खुसरों की पहेलियाँ और मुकरियाँ

विद्यापति की पदावली (संपादक – डॉ. नरेन्द्र झा) – पद संख्या 1 – 25

कबीर – (सं:- हजारी प्रसाद द्विवेदी) – पद संख्या 160 – 209

जायसी ग्रंथावली – (सं. रामचन्द्र शुक्ल) – नागमती वियोग खण्ड

सूरदास – भ्रमरगीत सार (सं. रामचन्द्र शुक्ल) – पद संख्या 21 से 70

7: हिन्दी उपन्यास

पं. गौरीदत्त – देवरानी जेठानी की कहानी

लाला श्रीनिवास दास – परीक्षा गुरू

प्रेमचंद – गोदान

अज्ञेय – शेखर एक जीवनी (भाग – 1)

हजारी प्रसाद द्विवेदी – बाणभट्ट की आत्मकथा

फणीश्वरनाथ रेणु – मैला आंचल

यशपाल – झूठा सच

अमृतलाल नागर – मानस का हंस

भीष्म साहनी – तमस

8: हिन्दी कहानी

राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) – चन्द्रदेव से मेरी बातें, दुलाईवाली

माधवराव सप्रे – एक टोकरी भर मिट्टी

सुभद्रा कुमारी चौहान – राही

प्रेमचंद – ईदगाह, दुनिया का अनमोल रतन

राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह – कानों में कंगना

चंद्रधर शर्मा गुलेरी – उसने कहा था

जयशंकर प्रसाद – आकाशदीप

9: हिन्दी नाटक

भारतेन्दु – अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा

जयशंकर प्रसाद – चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी

धर्मवीर भारती – अंधायुग

लक्ष्मीनारायण लाल – सिंदूर की होली

मोहन राकेश – आधे-अधूरे, आषाढ़ का एक दिन

हबीब तनवीर – आगरा बाज़ार

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना – बकरी

शंकरशेष – एक और द्रोणाचार्य

उपेन्द्रनाथ अश्क – अंजो दीदी

मन्नू भंडारी – महाभोज

10: हिन्दी निबंध

भारतेन्दु – दिल्ली दरबार दर्पण, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है।

प्रताप नारायण मिश्र – शिवमूर्त्ति

बालकृष्ण भट्ट – शिवशंभु के चिट्ठे

रामचन्द्र शुक्ल – कविता क्या है

हजारी प्रसाद द्विवेदी – नाखून क्यों बढ़ते हैं

विद्यानिवास मिश्र – मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

अध्यापक पूर्ण सिंह – मजदूरी और प्रेम

कुबेरनाथ राय – उत्तराफाल्गुनी के आस-पास

विवेकी राय – उठ जाग मुसाफिर

नामवर सिंह – संस्कृति और सौंदर्य

11: आत्मकथा, जीवनी तथा अन्य गद्य विधाएं

रामवृक्ष बेनीपुरी – माटी की मूरतें

महादेवी वर्मा – ठकुरी बाबा

तुलसीराम – मुर्दहिया

शिवरानी देवी – प्रेमचंद घर में

मन्नू भंडारी – एक कहानी यह भी

विष्णु प्रभाकर – आपहूदरी

हरिशंकर परसाई – भोला

रामणिका गुप्ता – आवारा

हरिवंशराय बच्चन – क्या भूलूँ क्या याद करूँ

अज्ञेय – अरे यायावर रहेगा याद

+++

शैक्षणिक भ्रमण

(सत्र 2024-25)

चलो चलें लेखक के घर

बंगाली ड्योढ़ी , स्वतंत्रता सेनानी
सुभाष चन्द्र बोस के मौसी का घर।

गोपाल मंदिर (वाराणसी)

विविध गतिविधियों की प्रकाशकीय

हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने की जरूरत: प्रो. रचना

वीकेएम में हिंदी सृजनशील का आयोजन

varanasi@inext.co.in

VARANASI (16 Sept): वसंत कन्या महाविद्यालय के सभागार में हिंदी सृजनशील का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य हिंदी विषय से इतर विषय के शिक्षक-शिक्षिकाओं के सृजनात्मक मूल्यों को अवसर प्रदान करना रहा. हिंदी साहित्य में विशेष रुचि रखने वाली वीकेएम की प्राचार्य प्रो. रचना श्रीवास्तव एवं हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. आशा यादव ने अपने विचारों से हिन्दी की व्याख्या की. प्रो. रचना ने कहा कि आज हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने की अति आवश्यकता है. हिंदी भाषीय को अपनी भाषा पर गर्व करते हुए बिना किसी हीन भावना के अंग्रेजी के समक्ष सशक्त रूप में इसे स्थापित करने का सफल प्रयास करना चाहिए. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्कृत विभाग की पूर्व अध्यक्ष डॉ. कमला पांडेय ने दुर्गा-सप्तशती एवं रामार्चा के हिंदी अनुवाद का पाठ प्रस्तुत किया. इस दौरान हिंदी विभाग से प्रो. आशा यादव, डॉ. सपना भूषण तथा अन्य विषयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं में प्रो. पूनम पांडेय, डॉ.मंजू कुमारी, डॉ. प्रियंका पाठक, डॉ. नैरंजना श्रीवास्तव, डॉ.आरती कुमारी, डॉ. आरती चौधरी, डॉ.आशीष कुमार, डॉ. सुप्रिया सिंह एवं डॉ. पूर्णिमा सिंह आदि ने नाटक, संस्मरण एवं काव्य की सुंदर प्रस्तुति दी. हिंदी विभाग की डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव की पुस्तक का लोकार्पण किया गया.

वीकेएम में हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित हुई संगोष्ठी

डिजीटल क्राति का युग और हिंदी भाषा की भूमिका विषयक संगोष्ठी मे डॉ विवेक सिंह ने दिया सारगर्भित व्याख्यान

डॉ राम शंकर सिंह

वाराणसी। वसन्त कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में पुनर्नवा हिन्दी साहित्य परिषद, हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में डिजिटल क्राति का युग और हिन्दी भाषा की भूमिका विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्राओं को उद्बोधित करते हुए ओजस्वी प्राचार्या प्रो० रचना श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा को आत्मविश्वास पूर्वक पढ़ने-लिखने एवं व्यवहार में प्रयोग के लिए प्रेरित किया।

डिजिटल क्राति के युग में हिन्दी की भूमिका पर अपने विचार रखते हुए मुख्य अतिथि डॉक्टर विवेक सिंह, सहायक आचार्य हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में मान्यता मिलने से लेकर वर्तमान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में उसकी जटिलताओं और चुनौतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिन्दी की स्थिति तभी मजबूत बनी रह सकती हैं जब तकनीक के क्षेत्र में उसका व्यवहार युवाओं द्वारा उत्साह पूर्वक किया जाएगा। अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डॉ. सपना भूषण ने हिन्दी दिवस को केंद्र में रखकर भाव प्रवण हिन्दी शीर्षक स्वरचित कविता का पाठ किया. मुख्य अतिथि ने डॉ.सपना की %हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास% पुस्तक का लोकार्पण किया. सुश्री राजलक्ष्मी ने भी हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में स्वरचित कविता पाठ किया। संगीत विभाग से डॉक्टर पूनम वर्मा द्वारा कबीर भजन की प्रस्तुति दी गई एवं प्रकृति जायसवाल ने हिन्दी के महत्व पर अभिभाषण एवं सोनम यादव ने अमीर खुसरो के गीत की मनमोहक प्रस्तुतियों से आयोजन को रंग प्रदान किया। अवसर पर डॉक्टर शशिकला, डॉक्टर शुभांगी श्रीवास्तव, डॉक्टर प्रीति विश्वकर्मा, सुश्री राजलक्ष्मी जायसवाल एवं सौम्यकान्ति मुखर्जी के साथ ही महाविद्यालय के सभी शिक्षक-गणों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति रहीं। कार्यक्रम का संचालन स्वाति पाण्डेय तथा अनन्या सृष्टि एवं धन्यवाद ज्ञापन अनुपमा त्रिपाठी ने किया।

वीकेएम में हिंदी कल-आज और कल पर व्याख्यान

वाराणसी (जनवार्ता)। वसन्त कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में पुनर्नवा हिन्दी साहित्य परिषद हिन्दी विभाग द्वारा शनिवार को हिंदी कल,आज और कल विषयक एकल व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. नीरज खरे, आचार्य हिन्दी विभाग बीएचयू ने हिन्दी के आदि कवि अमीर खुसरो से प्रारम्भ करते हुए हिन्दी भाषा के अतीत पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम की सफलता के लिए महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. रचना श्रीवास्तव ने शुभकामना एवं आशीर्वाद प्रेषित किया। जहाँ विभागाध्यक्ष प्रो आशा यादव ने भी अपनी शुभेच्छाएं प्रेषित की। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि के स्वागत एवं डॉक्टर सपना भूषण द्वारा स्वागत वक्तव्य से हुआ। कार्यक्रम का संचालन परास्नातक अंतिम वर्ष की छात्रा रिशिता एवं धन्यवाद ज्ञापन अनुपमा त्रिपाठी ने दिया। इस अवसर पर डॉ. शशिकला, डॉ. प्रीति विश्वकर्मा, डॉ. ज्योति गुप्ता, राजलक्ष्मी जायसवाल सहित अन्य महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी शामिल रहे।

राधा-कान्हा के वेश में सजकर गीतों पर थिरकीं छात्राएं

वाराणसी। वसंत कन्या महाविद्यालय कमच्छा में श्रीकृष्ण जनमाष्टमी के उपलक्ष्य में आयोजित उत्सव में छात्राओं ने एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति से सभी का दिल जीत लिया। नंद घर बजत बधाई भजन संध्या में राधा-कान्हा के वेश में सजी छात्राएं गीतों पर खूब थिरकी। इस दौरान कृष्ण की बाल लीलाओं का प्रदर्शन आकर्षण का केंद्र रहा। महाविद्यालय के संगीत गायन विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में गायन, वादन के साथ ही मनमोहक नृत्य की प्रस्तुतियां देखने को मिली। इस दौरान प्रो. रचना श्रीवास्तव, पूनम वर्मा, शांता चटर्जी, डॉ. सपना भूषण डॉ. ममता मिश्रा मौजूद रहीं। ब्यूरो

वसंत कन्या महाविद्यालय कमच्छा में जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में नृत्य नाटिका प्रस्तुत करती छात्रा। संवाद

बांसुरी पर बजाई मिर्जापुरी कजरी

छावनी परिषद एवं दीपिका कल्चरल सोसायटी ऑफ इंडिया की ओर से शनिवार को छावनी के नेहरू पार्क में वरुणा संध्या का आयोजन किया गया। वरुणा संध्या में बांसुरी वादक दिलीप शंकर ने रागों की अवतारणा की और मिश्र पीलू में धुन की प्रस्तुति की। इसके बाद मिर्जापुरी कजरी और अंत में राम भजन रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम प्रस्तुत कर माहौल को भक्तिमय कर दिया। इस दौरान तनुज कुमार वर्मा, काशीराम कुशवाहा मौजूद रहे।

बांस फाटक पर जन्माष्टमी के लिए खिलौनों की खरीदारी करते लोग। संवाद

कजरी गीतों पर थिरकीं, राधा-कृष्ण की सजाई झांकी

वाराणसी। मारवाड़ी युवा मंच अन्नपूर्णा शाखा की ओर से छावनी स्थित एक होटल में तीज एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। महिलाओं ने तीज के रंग कान्हा के संग थीम पर धमाल मचाया। कान्हा रैंप पर इठलाए तो महिलाओं कजरी व फिल्मी गीतों पर थिरकीं। तीज क्वीन शेफाली अग्रवाल एवं रनर अप जया अग्रवाल रहीं। मुख्य अतिथि प्रो. मनुलता शर्मा व विशिष्ट अतिथि प्रो कंचन कुशवाहा ने भी कार्यक्रम का लुत्फ उठाया। ब्यूरो

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में हिन्दी की चुनौतियों पर चर्चा

वाराणसी (जनवार्ता)। वसन्त कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में पुनर्नवा हिन्दी साहित्य परिषद, हिन्दी विभाग ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में डिजिटल क्रांति का युग और हिन्दी भाषा की भूमिका विषयक संगोष्ठी का आयोजन शनिवार को किया गया इस दौरान कार्यक्रम में प्राचार्या प्रो रचना श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा को आत्मविश्वास पूर्वक पढ़ने-लिखने एवं व्यवहार में प्रयोग के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. विवेक सिंह, सहायक आचार्य हिन्दी विभाग, बीएचयू ने हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में मान्यता मिलने से लेकर वर्तमान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में उसकी जटिलताओं और चुनौतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डॉ. सपना भूषण द्वारा हिन्दी दिवस को केंद्र में रखकर भाव प्रवण हिन्दी शीर्षक स्वरचित कविता का पाठ किया गया तथा 'हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। इसके साथ ही राजलक्ष्मी ने भी स्वरचित कविता पाठ किया। वही, संगीत विभाग से डॉ. पूनम वर्मा ने कबीर भजन की प्रस्तुति दी एवं प्रकृति जायसवाल ने हिन्दी के महत्व पर अभिभाषण एवं सोनम यादव ने अमीर खुसरो के गीत की प्रस्तुतियों से आयोजन को रंग प्रदान किया। इस अवसर पर डॉ.शशिकला, डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव, डॉ. प्रीति विश्वकर्मा, राजलक्ष्मी जायसवाल, सौम्यकान्ति मुखर्जी सहित अन्य महाविद्यालय के शिक्षक एवं विधार्थी मौजूद रहें। संचालन स्वाति पाण्डेय, अनन्या सृष्टि एवं धन्यवाद ज्ञापन अनुपमा त्रिपाठी द्वारा दिया गया।

सांगीतिक संध्या सह प्रतियोगिता

दिव्यांशी झा , वाराणसी ; वसंत कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग में चल रहे हिंदी सप्ताहोत्सव के द्वितीय दिवस दिनांक - 10-10 2023 को अपराह्न 2:00 बजे महाविद्यालय के सभागार में हिंदी विभाग द्वारा संगीतिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ हिंदी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉक्टर सपना भूषण ने छात्राओं को प्रतियोगिता के नियम बताते हुए शुभकामनाओं के साथ किया।छात्राओं के उत्साहवर्धन हेतु महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव ने अपना ओजस्वी वक्तव्य देते हुए कहा कि विभिन्न विकट परिस्थितियों में हमें जीवन जीने की कला को नहीं भूलना चाहिए। स्वयं को खुश रखना अपनी जिम्मेदारी होती है। अतः इस तरह की प्रतियोगिताएं जो हमारे भीतर नव उत्साह व नव ऊर्जा का संचार करती हैं तथा जिससे हमारा मनोरंजन होता है और जो हमारे भीतर छुपे हुए प्रतिभा को निखारती है उनका होना अति आवश्यक है । हिंदी विभाग द्वारा आयोजित इस तरह की प्रतियोगिताओं की उन्होंने हृदय से प्रशंसा की। प्रतियोगिता में बतौर निर्णायक मंडल के रूप में संगीत गायन विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर सीमा वर्मा,डॉक्टर अनुराधा बापुली, डॉ नैरंजना श्रीवास्तव एवं डॉ प्रियंका पाठक ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की कार्यक्रम में लगभग 17 छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभागिता किया। जिसमें संगीत विभाग से तबला वादक अमित ईश्वर जी ने तबले का मधुर वादन कर कार्यक्रम में चार चांद लगा दिया। हारमोनियम पर संगीत विभाग की छात्राओं ने संगत किया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्राओं में स्वस्ति मिश्रा, आरती कुमारी, श्रेया पांडे, सौम्या वर्मा, प्रकृति सिंह, धर्मशीला कुमारी, आंचल मौर्य, पल्लवी राय, रितु तिवारी, शिवांगी शर्मा, रिया वत्स, वैदेही निमगावकर आदि छात्राओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रूप से एसोसिएट प्रोफेसर सपना भूषण व स्नातक तृतीय वर्ष की छात्रा जहान्वी द्विवेदी के द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता के समापन में कार्यक्रम संयोजिका डॉक्टर सपना भूषण जी ने सबको धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक गण भी उपस्थित रहें।

धन्यवाद

करते हैं तन- मन से वंदन

जन -गन -मन की अभिलाषा का

अभिनंदन अपनी संस्कृति का

आराधना अपनी भाषा का।

(हिन्दी विभाग)

वसन्त कन्या महाविद्यालय

(कमच्छा वाराणसी)